सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 8 ● अंक: 283 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, गुरुवार, 24 नवम्बर, 2022
मूल्य ₹ 3/-

हम बदलाव की शुरुआत अपने घरों, आस, पड़ोस की जगहों, बस्तियों, गावों, और स्कूलों से कर सकते हैं।
-किरण बेदी

गुजरात में ओबीसी मतदाताओं को साध... 7 | स्थायी हो गया अखिलेश और... 3 | नेताजी का आशीर्वाद तो बीजेपी... 2

भारत जोड़ो यात्रा में राहुल का साथ देने पहुंचीं प्रियंका गांधी

» एमपी में बीजेपी के गढ़ खंडवा में यात्रा में पहली बार शामिल हुईं कांग्रेस महासचिव प्रियंका

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा जारी है। आज मध्यप्रदेश की यात्रा में कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी भी शामिल हुईं। बताया जा रहा है कि प्रियंका ने अपने संदेश में इतना ही कहा कि भाई के साथ चलने से बहन को खुशी मिलती है। यात्रा खंडवा के बोरगांव बुजुर्ग से शुरू हो चुकी है। राहुल अब तक 13 किमी चल चुके हैं। मध्यप्रदेश में यात्रा का यह दूसरा दिन है। राहुल के साथ मध्यप्रदेश कांग्रेस के तमाम नेता और उनकी बहन प्रियंका गांधी भी यात्रा में पैदल चल रही हैं। यात्रा का 78वां दिन है। प्रियंका पहली बार यात्रा में शामिल हुई हैं। उनके साथ रॉबर्ट वाड्रा और बेटे रेहान वाड्रा भी हैं। कन्हैया कुमार भी यात्रा में साथ हैं। इससे पहले सोनिया गांधी एक दिन के लिए यात्रा में शामिल हुई थीं। राहुल गांधी रुस्तमपुर पहुंच चुके हैं। वे यहां टंट्या भील की जन्मस्थली जाएंगे। यहां जनसभा होगी।

इसके बाद डूल्हार के गुरुद्वारा में लंच ब्रेक होगा। यहां से यात्रा छैगांव माखन के लिए चलेगी, वहां नुक्कड़ सभा के बाद दूसरे दिन का सफर खत्म होगा। रात्रि विश्राम खरगोन जिले के खेरदा में होगा। प्रदेश में यात्रा की शुरुआत कल से बुरहानपुर के बोदरली गांव से हुई थी। यात्रा 12 दिन में 6 जिलों को नापती हुई 4 दिसंबर को राजस्थान में एंट्री करेगी। राहुल गांधी कल यानी शुक्रवार, 25 नवंबर को शाम 6:30 बजे ओंकारेश्वर में मां नर्मदा की आरती, ओंकारेश्वर के दर्शन और आराधना करेंगे।

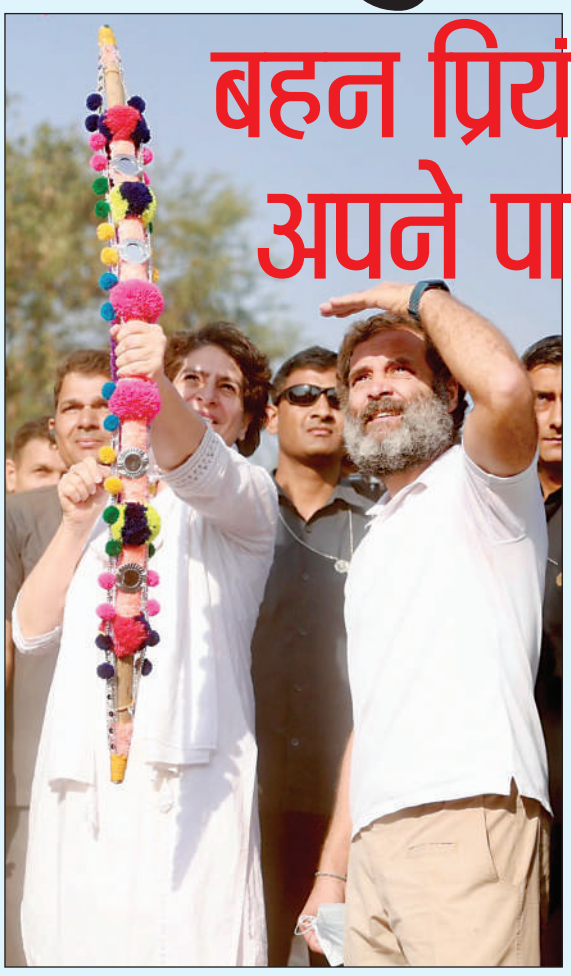

बहन प्रियंका संग बीजेपी वोटर्स को अपने पाले में लाने में जुटे राहुल

'मंजिल जरूर पाएंगे'

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने आज ट्वीट किया कि रास्तों से लड़कर हमने कई मुकाम बनाए हैं। साथ हैं तो यकीन है, मंजिल जरूर पाएंगे। राहुल के इस ट्वीट के बाद सोशल मीडिया यूजर्स ने कहा- मंजिल जरूर मिलेगी, यूं ही चलते जाइए। कठिनाइयां जरूर आएंगी पर अंत में जीत संघर्ष की ही होगी। बता दें कि कन्याकुमारी से कश्मीर तक की 3570 किलोमीटर लंबी यात्रा में से राहुल गांधी अब तक 2000 किलोमीटर की दूरी तय कर चुके हैं।

चार दिसंबर को राजस्थान में प्रवेश करेगी यात्रा

कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा सुर्खियों में है। ये यात्रा महाराष्ट्र से निकलकर इस वक्त मध्य प्रदेश के पड़ाव पर है। इस यात्रा में आज रॉबर्ट वाड्रा भी प्रियंका के साथ हैं। वहीं मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ और सचिन पायलट भी यात्रा में साथ चल रहे हैं, समर्थकों की भी भारी भीड़ है। आज ये यात्रा 23 किलोमीटर तक चलेगी। राहुल नीत भारत जोड़ो यात्रा मध्य प्रदेश में 380 किलोमीटर का फासला तय करने के बाद चार दिसंबर को राजस्थान में प्रवेश करेगी। उज्जैन में होने वाली जनसभा अब 29 नवंबर को होगी, पहले यह सभा 30 नवंबर को होनी थी।

अग्नि-3 का सफल परीक्षण परमाणु बम गिराने में सक्षम

» ढाई मिनट में इस्लामाबाद पहुंच जाएगी अग्नि-3

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। ओडिशा के अब्दुल कलाम व्हीलर आईलैंड पर अग्नि-3 मिसाइल का सफल परीक्षण किया गया। इस मिसाइल को सेना में शामिल किए हुए 11 साल हो चुके हैं। यह एक इंटरमीडिएट-रेंज की बैलिस्टिक मिसाइल है, जो परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम है।

इसमें एक साथ कई टारगेट पर हमला करने वाली तकनीक एमआईआरवी जैसी ही समान टेक्नोलॉजी है। अग्नि-3 मिसाइल की सबसे बड़ी खासियत उसकी गति है। इस मिसाइल की रेंज 3 से 5 हजार किलोमीटर बताई जाती है यानी हथियार का वजन कम या ज्यादा करके रेंज को बढ़ाया या कम किया जा सकता है। 3 से 5 हजार किलोमीटर की रेंज यानी चीन का बहुत बड़ा हिस्सा, पूरा पाकिस्तान, पूरा अफगानिस्तान, हॉर्न ऑफ अफ्रीका, अरब देश, इंडोनेशिया, म्यांमार जैसे कई देश इसकी जद में हैं। 5 से 6 किलोमीटर प्रति सेकेंड की स्पीड है।

चुनाव आयोग की नियुक्ति मामले में सुप्रीम कोर्ट के पास फैसला सुरक्षित

» शीर्ष अदालत ने सरकार से पूछा- बिजली की स्पीड जैसी क्यों चली अरुण गोयल की नियुक्ति की फाइल?

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने आज मुख्य चुनाव आयुक्त के अपॉइंटमेंट की ओरिजिनल फाइल सुप्रीम कोर्ट को सौंपी। सुप्रीम कोर्ट सीईसी और ईसी की नियुक्ति की प्रक्रिया पर सुनवाई कर रहा है। कोर्ट ने बुधवार को केंद्र से अपॉइंटमेंट की फाइल मांगी थी। वहीं आज फाइल देखने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र से कहा- चुनाव आयुक्त के अपॉइंटमेंट की फाइल बिजली की तेजी से क्लियर की गई। यह कैसा मूल्यांकन है। हमारा सवाल सीईसी की योग्यता पर नहीं है। अपॉइंटमेंट प्रोसेस पर सवाल उठा रहे हैं।

संविधान पीठ के सामने हुई लंबी बहस के बाद बेंच ने इस मामले पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है। जस्टिस केएम जोसेफ की अगुवाई वाली बेंच में जस्टिस अजय रस्तोगी, जस्टिस अनिरुद्ध बोस, जस्टिस ऋषिकेश रॉय और जस्टिस सीटी रविकुमार इस मामले की सुनवाई कर रहे हैं। दरअसल, 1985 बैच के आईएएस अरुण गोयल ने उद्योग सचिव पद से 18 नवंबर को वीआरएस लिया था। इस पद से उन्हें 31 दिसंबर को रिटायर होना था। गोयल को 19 नवंबर को सीईसी अपॉइंट कर दिया गया।

नेताजी का आशीर्वाद तो बीजेपी के साथ: केशव मौर्य

» मैनपुरी हमारे लिए रामपुर और आजमगढ़ से ज्यादा अनुकूल सीट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मैनपुरी सीट पर नैया पार लगाने के लिए सपा के साथ ही बीजेपी को भी मुलायम सिंह यादव के नाम में सहारा दिख रहा है। चुनावी माहौल में डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि नेताजी का आशीर्वाद बीजेपी के साथ है। मैनपुरी हमारे लिए रामपुर और आजमगढ़ से ज्यादा अनुकूल सीट है। उन्होंने कहा कि मुलायम सिंह यादव के प्रति हमारा राष्ट्रीय नेतृत्व सम्मान का भाव रखता था।

केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि मुलायम सिंह के खिलाफ प्रचार करने 2014 में पीएम या राष्ट्रीय अध्यक्ष नहीं गए, 2019 के चुनाव में भी नहीं गए, जब 94-95 हजार वोट से जीते। पीएम मोदी की एक सभा फिरोजाबाद, बदायूं, कन्नौज में होती तो सपा के किले को ढहा देती है। मुलायम सिंह यादव के प्रति सम्मान था, सम्मान है लेकिन जो सम्मान है वह तब किया

गया जब नेता जी थे। जो उनके परिवार के लोग बन करके सोचते हैं कि नेताजी के नाम पर उनके कारण से वोट मिलेगा तो मुझे लगता है नेताजी का आशीर्वाद तो बीजेपी के साथ है। उन्होंने कहा कि आजमगढ़ नहीं बचा और आजम खां का गढ़ नहीं बचा। दोनों जगह बीजेपी का कमल खिल चुका है तो मैनपुरी में भी कमल खिलेगा। वह पूरा जोर लगा ले, जनता ने फैसला कर लिया है कि वह मैनपुरी, रामपुर और खतौली में बीजेपी के साथ है, जो अंडरकरेंट है वह सपा के खिलाफ है। लोग जानते हैं कि बीजेपी रहेगी तो गुंडागर्दी नहीं होगी, सपा होगी तो गुंडागर्दी तय है। अपनी सुरक्षा के लिए लोग कमल खिला रहे हैं, सपा तो बर्बादी की प्रतीक है। सपा मीडिया सेल के आधिकारिक ट्विटर हैंडल से अभद्र भाषा में हुए ट्वीट पर केशव प्रसाद मौर्य ने कहा जो जिस संस्कार के लोग होते हैं उसी प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हैं। उनकी इस भाषा का करारा जवाब जनता वोट के माध्यम से देगी। हम तो सब से अपेक्षा करते हैं कि संस्कार युक्त रहिए। सरकार की आलोचना करना विपक्ष का अधिकार होता, लेकिन अभद्र भाषा का इस्तेमाल करने का अधिकार किसी को नहीं है।

उपचुनाव से पहले अखिलेश यादव की बड़ी सेंधमारी

» बसपा छोड़कर सपा में शामिल अशोक चौहान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मैनपुरी के चुनावी रण को जीतने के लिए सपा और भाजपा मुस्तैदी के साथ जुटी हैं। दोनों के नेता एक-दूसरे के वोट बैंक में सेंध लगाने की कोशिश में हैं। भाजपा जहां बूथवार बैठकें करके वोटबैंक की किलेबंदी करने में जुटी है। वहीं अब अखिलेश यादव ने भी भाजपा-बसपा के वोटबैंक में सेंध लगाने का दांव चल दिया है। उनका दूसरे दलों में सेंध लगाने का दांव सफल भी हो रहा है।

अखिलेश यादव बुधवार को बसपा के टिकट पर विधानसभा क्षेत्र भोगांव से चुनाव लड़ने वाले अशोक चौहान फौजी के घर पहुंच गए। फौजी ने भी 'हाथी' की सवारी छोड़कर अखिलेश के हाथ समाजवादी टोपी पहन ली। फौजी ने वर्ष 2022 का विधानसभा चुनाव लड़ा था और 14150 वोट हासिल किए थे। उपचुनाव से पहले वह सपा में शामिल हो गए हैं। सपा को उनसे कितना फायदा होगा यह चुनाव के बाद पता चलेगा।

निर्णायक साबित होगा बसपा का वोट

लोकसभा उपचुनाव में मैनपुरी सीट पर बसपा का वोटर निर्णायक साबित होगा। दरअसल सपा और भाजपा दोनों ही दलों के पास अपना जनाधार और कोर वोट बैंक है। वहीं बसपा का कोर वोट बैंक माने जाने वाली जाटव जाति भी लोकसभा क्षेत्र में सवा लाख के करीब है। ऐसे में इसी वोट बैंक को साधने के लिए अखिलेश की नजर में बसपा नेता हैं। जनसंपर्क के दौरान वह इन नेताओं के घर भी जा रहे हैं।

बाकी धर्मों के लोगों को भी हो एक ही शादी का अधिकार: हेमंत बिस्वा

» सिर्फ बीजेपी ही ला सकती है यूनिफॉर्म सिविल कोड

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अहमदाबाद। गुजरात विधानसभा चुनाव के पहले चरण का मतदान होने में अब सिर्फ एक हफ्ते का वक्त रह गया है। सभी दलों के दिग्गज जोर-शोर से चुनाव प्रचार में लगे हैं। इस बार गुजरात विधानसभा चुनाव में समान नागरिक संहिता यानी यूनिफॉर्म सिविल कोड का मुद्दा भी सुर्खियों में है। इसी कड़ी में बीजेपी नेता और असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा शर्मा ने यूनिफॉर्म सिविल कोड पर बड़ा बयान देते हुए मुस्लिमों में एक से ज्यादा शादियों पर निशाना साधा।

उन्होंने यूनिफॉर्म सिविल कोड को देश की जरूरत बताया। गुजरात के धनसूरा में असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा शर्मा ने यूनिफॉर्म सिविल कोड की मांग उठाते हुए कहा कि इसके नहीं होने की वजह से ही कुछ लोग एक से ज्यादा महिलाओं के शादियां कर रहे हैं। उनका संकेत मुस्लिम समुदाय की ओर था, लेकिन उन्होंने अपने संबोधन में मुस्लिम शब्द का जिक्र नहीं किया। असम के मुख्यमंत्री ने कहा कि देश में अगर हिंदू एक

शादी करता है तो बाकि धर्मों के लोगों को भी एक ही शादी करनी पड़ेगी। कैसे कोई दो-दो तीन-तीन शादियां करेगा। इसलिए मैं आज ये बोल रहा हूं कि देश को यूनिफॉर्म सिविल कोड चाहिए। हेमंत ने आगे कहा महिलाओं का सम्मान होना चाहिए। अगर घर में एक बेटा है और एक बेटी है, तो बेटे का जो अधिकार है, बेटी को भी वो अधिकार मिलना चाहिए। अगर एक पुरुष है तो एक महिला से शादी कीजिए। दो-दो तीन महिलाओं से आप शादी मत कीजिए. आज देश को यूनिफॉर्म सिविल कोड चाहिए। कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि यूनिफॉर्म सिविल कोड सिर्फ बीजेपी ही ला सकती है।

आरक्षण पर भाजपा सरकार का फैसला वापस होगा : गहलोत

» बोले- युवाओं की मांग सही, 16 राज्यों और केंद्र का मॉडल लागू करेंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। आरक्षण विसंगति को लेकर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने जल्द कैबिनेट में फैसला करने की घोषणा की है। गहलोत ने पिछली बीजेपी सरकार के समय 2018 में जारी सर्कुलर को वापस लेने के संकेत दिए हैं। गहलोत ने ओबीसी मुद्दे पर नाम लिए बिना कांग्रेस नेता हरीश चौधरी को इशारों में निशाने पर लेते हुए कहा कि कुछ लोग भ्रम फैला रहे हैं। गहलोत ने कहा- ओबीसी नौजवानों की मांग भी वाजिब है। ओबीसी युवाओं की जो मांग है, पिछली सरकार से टेक्निकली गलती हुई है।

हमने पूरा सर्वे करवाया है। पूरे देश 16 राज्यों और केंद्र के अंदर ओबीसी आरक्षण का जो फॉर्मूला है, वह राजस्थान में भी लागू होगा। हम चाहेंगे कैबिनेट में डिस्कस करें, फैसला करें। अन्याय किसी के साथ नहीं होना चाहिए। गहलोत जयपुर में प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में मीडिया से बातचीत कर रहे थे। गहलोत ने कहा- ओबीसी आरक्षण को लेकर यह कुछ लोग भ्रम फैला रहे हैं। उन्हें भ्रम नहीं फैलाना चाहिए। उनकी मांग को हमने एग्जामिन करवाया है। उनकी मांग में दम भी है। हमने पूर्व सैनिक अफसरों से बातचीत की है। उन्हें हम विश्वास में ले रहे हैं, क्योंकि पूर्व सैनिकों को भी नुकसान नहीं होना चाहिए। उन्होंने देश के लिए सब कुछ न्योछावर किया है। अपनी जान की बाजी लगाकर सेना में गए हैं, उनके हित भी पूरी तरह देखे जाएंगे। दोनों पक्षों के साथ पूरा न्याय होगा। मैं तमाम पक्षों से अपील करूंगा कि वे किसी पक्ष में हों, मेरी मार्मिक अपील है कि ओबीसी नौजवानों, पूर्व सैनिकों के हित को देखते हुए मेरी मार्मिक अपील है कि यह जातिगत मुद्दा नहीं बन जाए। गहलोत ने कहा- यह जाट, राजपूतों का मुद्दा नहीं है। जिस तरह की ध्वनि निकल रही है, उससे दुख होता है। 40 साल से देख रहा हूं। जाट, राजपूत गुर्जर, मीणा कोई जाति हो, सबको कांग्रेस ने नजदीक लाने का प्रयास किया है।

शिवराज मंत्रिमंडल विस्तार में शामिल हो सकते हैं पुराने चेहरे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। मध्यप्रदेश में कैबिनेट विस्तार की चर्चा के बीच कुछ पुराने चेहरों को भी जगह मिल सकती है। शिवराज मंत्रिमंडल विस्तार में कुछ पुराने चेहरों के नाम भी जुड़ सकते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के हस्तक्षेप की खबरें सामने आ रही हैं। मंत्रिमंडल विस्तार के लिए गुजरात चुनाव परिणाम आने का इंतजार किया जा रहा है।

चुनाव परिणाम आने के बाद शिवराज कैबिनेट में नए मंत्रियों की ताजपोशी होगी। सूत्रों का कहना है कि संघ ने पुराने चेहरों को दरकिनार नहीं करने की सलाह दी है। फिलहाल शिवराज कैबिनेट में चार पद खाली चल रहे हैं। कहा जा रहा है कि परफॉर्मेंस के आधार पर कुछ पुराने चेहरों को हटाकर नए चेहरों को मौका दिया जा सकता है। हालांकि शिवराज सरकार के लिए बदलाव करना आसान नहीं होगा। सीएम शिवराज सिंह चौहान को केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया से भी सलाह लेनी पड़ सकती है। मंत्रिमंडल विस्तार में जातिगत समीकरण के साथ-साथ नाराज चल रहे विधायकों को मनाने का काम भी किया जा सकता है। विधानसभा चुनाव के पहले मंत्रिमंडल विस्तार कर शिवराज सिंह एक तीर से कई निशाने साधना चाहते हैं। कयास लगाए जा रहे हैं कि ब्राह्मण जनप्रतिनिधि विधायक को मंत्री का एक पद दिया जा सकता है।

स्थायी हो गया अखिलेश और शिवपाल का राजनीतिक रिश्ता!

छह साल में चौथी बार नजदीक आए अखिलेश और शिवपाल

2016 से दोनों के रिश्ते कभी गरम तो कभी नरम रहे

हयात अब्बास

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव और उनके चाचा प्रगतिशील समाजवादी पार्टी (लोहिया) के प्रमुख शिवपाल सिंह यादव ने सैफई में एक मंच पर आकर कहा हम एक ही है। परिवार में खटपट होती है पर दूरियां मिट ही जाती है। छह साल में ये चौथा मौका था, जब दोनों ने आपसी मतभेद भुलाकर एक-दूसरे का सहयोग करने की घोषणा की। हालांकि दोनों के समर्थक इस नई सुलह को लेकर अभी संशय में हैं।

अखिलेश के मुख्यमंत्री रहते हुए 2016 में पहली बार दोनों के बीच मतभेद सार्वजनिक हुए थे और तब से दोनों के रिश्ते कभी गरम तो कभी नरम रहे हैं। इस बार सपा के संस्थापक मुलायम सिंह यादव के निधन के बाद मैनपुरी संसदीय क्षेत्र में हो रहे उपचुनाव ने चाचा-भतीजा को मनमुटाव दूर करने का मौका फिर से उपलब्ध कराया है। मैनपुरी में सपा ने अखिलेश की पत्नी डिंपल यादव को उम्मीदवार बनाया है। जबकि बीजेपी ने उनके खिलाफ कभी शिवपाल के करीबी रहे रघुराज शाक्य को मैदान में उतारा है। गौरतलब है कि 10 अक्टूबर को मुलायम के निधन के बाद अखिलेश को शिवपाल के कंधे पर सिर रखकर रोते और शिवपाल को उनका संबल बढ़ाते देखा गया था। हरिद्वार और प्रयागराज में मुलायम के अस्थि विसर्जन के दौरान भी अखिलेश और शिवपाल साथ नजर आए थे। यादव परिवार से जुड़े सूत्रों ने बताया कि पारिवारिक एकता को मजबूत करने के शुभचिंतकों, रिश्तेदारों और प्रमुख कार्यकर्ताओं के दबाव ने भी चाचा-भतीजा को फिर से करीब लाने में अहम भूमिका निभाई है।

मुलायम की पहल पर हुए एकजुट

उत्तर प्रदेश में चुनावों के पहले तीसरी बार मुलायम की पहल पर अखिलेश और शिवपाल एक बार फिर साथ आए। शिवपाल ने सपा के चुनाव चिह्न पर ही जसवंत नगर से विधानसभा चुनाव लड़ा और जीते। चुनाव के दौरान वो लगातार अखिलेश यादव के नेतृत्व की सराहना करते रहे, लेकिन चुनाव बाद सपा विधायक दल की पहली बैठक में जब शिवपाल को आमंत्रित नहीं किया गया तो उन्होंने एक बार फिर भतीजे के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। अब छह वर्ष के भीतर चौथी बार अखिलेश और शिवपाल नजदीक आए हैं तो दोनों के समर्थक नई सुलह को लेकर असमंजस में हैं।

2017

के चुनाव में शिवपाल ने सपा के ही चुनाव चिह्न पर जसवंत नगर से चुनाव जीता था

2018

में शिवपाल यादव ने प्रसपा का गठन कर अलग पार्टी बनाया

जब पहली बार सामने आए मतभेद

अक्टूबर 2016 में सपा की सरकार का नेतृत्व कर रहे तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने शिवपाल सिंह यादव, अंबिका चौधरी, नारद राय, शादाब फातिमा, ओमप्रकाश सिंह और गायत्री प्रजापति को अपने मंत्रिमंडल से बाहर कर दिया था। उस समय मुलायम सिंह यादव ने दोनों के बीच सुलह कराई थी और 2017 के चुनाव में शिवपाल ने सपा के ही चुनाव चिह्न पर जसवंत नगर से चुनाव जीता था पर ये समझौता ज्यादा दिन नहीं चला और शिवपाल ने 2018 में प्रसपा का गठन कर लिया। शिवपाल यादव के अलग पार्टी बनाने के बाद सपा ने उनकी विधानसभा सदस्यता समाप्त करने की मांग वाली याचिका भी दाखिल की। बाद में मार्च 2020 में सपा ने विधानसभा में एक अर्जी देकर शिवपाल के खिलाफ दल-बदल कानून के तहत कार्रवाई करने की मांग वाली याचिका वापस करने की मांग की। उत्तर प्रदेश विधानसभा के तत्कालीन अध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित ने सपा की याचिका वापस कर दी, जिससे शिवपाल की विधानसभा सदस्यता बच गई। शिवपाल ने बदले में सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव के नेतृत्व के प्रति आभार जताया। पर कुछ ही दिनों बाद दोनों के रिश्तों में फिर से तल्खी दिखाई देने लगी। लोकसभा चुनाव में शिवपाल ने सपा से अलग चुनाव लड़ा।

क्या कहते हैं राजनीतिक जानकार

राजनीतिक विशेषज्ञ कहते हैं कि चाचा-भतीजे के रिश्ते की मजबूती उपचुनाव के परिणाम पर निर्भर करेगी। अगर डिंपल यादव चुनाव जीत गईं तो संबंध टिकाऊ हो सकते हैं, लेकिन अगर उनकी हार हुई तो विधानसभा चुनाव की तरह अखिलेश फिर अपने चाचा से दूरी बना लेंगे। उन्होंने उदाहरण दिया कि 2022 के विधानसभा चुनाव में सपा को 403 सीटों में सिर्फ 111, सहयोगी रालोद को आठ और सुभासपा को छह सीटें मिली, जिससे प्रदेश में सरकार बनाने का अखिलेश का सपना टूट गया। इसके बाद उनका सुभासपा और शिवपाल से राजनीतिक रिश्ता टूट गया। हालांकि यह संबंध अटूट है और अब जबकि नेताजी नहीं रहे तो दोनों मिलकर उनका सपना पूरा करेंगे और उनके रास्ते पर चलेंगे। राम गोविंद चौधरी कहते हैं कि यह तो अखिलेश-शिवपाल तय करेंगे, लेकिन अब राजनीतिक रिश्ता भी स्थायी हो गया है।

कहीं विरासत बचाने के लिए तो नहीं किया समझौता

सपा की राजनीति को करीब से समझने वालों का मानना है कि आजमगढ़ और रामपुर लोकसभा क्षेत्रों में हाल में हुए उपचुनाव में सपा को मिली करारी शिकस्त ने अखिलेश को शिवपाल के साथ तालमेल बैठाने के लिए मजबूर कर दिया है। आजमगढ़ सीट अखिलेश और रामपुर सीट सपा के वरिष्ठ नेता आजम खां के विधायक चुने जाने के बाद रिक्त हुई थी। जानकारों का तर्क है कि अखिलेश ने पारिवारिक गढ़ और अपनी सियासी विरासत बचाने के लिए चाचा शिवपाल से समझौता किया है। मैनपुरी लोकसभा क्षेत्र में आने वाले जसवंतनगर विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व शिवपाल करते हैं और इस लोकसभा सीट के सभी क्षेत्रों में उनका प्रभाव है।

अपने बेटे की राह बना रहे शिवपाल

इस नये गठजोड़ पर प्रसपा (लोहिया) के मुख्य प्रवक्ता दीपक मिश्रा ने कहा यह सबको साथ लेकर चलने की राजनीति है और समाजवादियों का तो आपस में मिलने-बिछड़ने का इतिहास रहा है। यह मेल-मिलाप उसी इतिहास का एक अध्याय है। उन्होंने कहा कि बड़े लक्ष्य के लिए लोग हमेशा एक होते हैं, भावनाओं में तो उतार-चढ़ाव आता ही रहता है। जानकारों का कहना है कि शिवपाल को अब अपने पुत्र और प्रसपा के प्रदेश अध्यक्ष आदित्य यादव के भविष्य की भी चिंता सताने लगी है। आदित्य की अखिलेश यादव से पहले से नजदीकी रही है इसलिए शिवपाल अपने बेटे के भविष्य की राह आसान करने के लिए भी अखिलेश का सहारा चाहते हैं।

मैनपुरी के चुनावी रण में प्रचार में जुटी भाजपा

मैनपुरी लोकसभा सीट पर हो रहे उपचुनाव को सपा और भाजपा हर हाल में जीतना चाहती हैं। भाजपा के दिग्गजों की भी प्रतिष्ठा दांव पर लगी हुई है। पार्टी हाईकमान से मिले लक्ष्य को हासिल करने के लिए ये दिग्गज घर-घर जाकर वोट मांग रहे हैं। मैनपुरी और करहल में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की दो जनसभाएं संभावित हैं। मैनपुरी सदर विधानसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी को जिताने की जिम्मेदारी पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह को सौंपी गई है। जयवीर सिंह क्षेत्र में अकेले ही प्रचार-प्रसार में जुटे हुए हैं। बात भोगांव विधानसभा सीट की करें तो इसकी जिम्मेदारी पूर्व आबकारी मंत्री एवं भोगांव विधायक रामनरेश अग्निहोत्री को सौंपी गई है। किशनी विधानसभा सीट पर खुद जिलाध्यक्ष प्रदीप चौहान की साख दांव पर है। वह इसी विधानसभा क्षेत्र के गांव खरगपुर के रहने वाले भी हैं। कुछ समय बाद जिलाध्यक्ष का भी चुनाव होना है, ऐसे में उपचुनाव इनके लिए किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं है। करहल विधानसभा क्षेत्र की जिम्मेदारी प्रदेश कार्यसमिति सदस्य राहुल चतुर्वेदी और जिला उपाध्यक्ष अरुण प्रताप सिंह को सौंपी गई है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष चौधरी भूपेंद्र सिंह 24 नवंबर को बूथ अध्यक्षों के सम्मेलन को संबोधित करेंगे। मीडिया प्रभारी सौरभ दुबे ने बताया कि किशनी और भोगांव विधानसभा क्षेत्र के बूथ अध्यक्षों का एक साथ, मैनपुरी और करहल विधानसभा क्षेत्र के बूथ अध्यक्षों का एक साथ सम्मेलन होगा।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

पर्यावरण को लेकर सजगता बढ़ी

पर्यावरण को स्वस्थ और समृद्ध बनाने की जब बात सामने आती है, तो वनों और उसमें रहने वाले जीव-जंतुओं की सुरक्षा का मुद्दा अति महत्वपूर्ण हो जाता है। खुशी की बात है कि इसकी प्रासंगिकता को समझते हुए पिछले दो-तीन दशकों में युवा पीढ़ी ने इस दिशा में कदम उठाए हैं और युवाओं में पर्यावरण को लेकर सजगता बढ़ी है। पर्यावरणविदों का शोध कहता है कि समृद्ध पर्यावरण के लिए 33 फीसदी वनों का होना जरूरी है, जबकि भारत में 17 फीसदी से अधिक वन नहीं हैं। घटते वनों और विलुप्त होते जीव-जंतुओं की रक्षा के लिए केंद्र सरकार ने समय-समय पर अनेक कानून बनाए हैं और वन्य जीवों के संरक्षण के लिए परियोजनाएं प्रारंभ की हैं। चाहे वह 1972 का वन्यजीव संरक्षण कानून हो या 1973 की बाघ बचाओ योजना हो या 1981 वन संरक्षण अधिनियम हो, इन सबने जनता में एक नई चेतना जागृत की। इसके बावजूद इस उभरते हुए रुझान को और व्यापक बनाने के लिए जरूरी है कि बच्चे इसका केंद्र बिंदु बनें और उन्हें बचपन से वनों एवं पर्यावरण की संपदा और उसकी विविधता की जानकारी दी जा सके। इसके लिए जरूरी है कि बच्चों को राष्ट्रीय उद्यानों की सैर कराई जाए और उन्हें बताया जाए कि कैसे वन हमारे रक्षक हैं। वनों का सौंदर्य अवश्य ही उनके मन को छू लेगा। इस दौरान विलुप्त होने वाली प्रजातियों और उनके संरक्षण के उपायों पर भी उनसे चर्चा की जा सकती है।

राष्ट्रीय उद्यानों के समग्र विकास हेतु आवश्यक है कि इनमें प्रवेश शुल्क कम हो, ताकि वन प्रेमी और स्कूली बच्चे उनमें जा सकें, और पेड़-पौधों एवं वन्यजीवों के प्रति उनके मन में संरक्षण का भाव पैदा हो सके। केंद्र और प्रदेश सरकारों को सोचना और समझना चाहिए कि वन अभयारण्य सरकार की आय का स्रोत न बनकर रह जाए, बल्कि वन प्रेमियों की आस्था का तीर्थस्थल बन सके, जहां प्रवेश करना उनके लिए दुरूह न होकर प्रेरणादायक हो। आम लोगों में जब पेड़-पौधों और वन्य-जीवों के प्रति सकारात्मकता और संवेदनशीलता की भावना पैदा होगी, तभी हमारे वन स्वस्थ बनेंगे और उनमें रहने वाले जीव-जंतु हमारी पर्यावरणीय जैव-विविधता को बढ़ाएंगे। इसके साथ-साथ हम अनेकों वन पर्यटकों को अवैतनिक रूप से वन प्रहरी के रूप में तैयार कर सकेंगे, जो समाज में इस विपुल संपदा के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करेंगे। राष्ट्रीय पार्कों का प्रबंधन देखने वाले लोगों को एक ऐसा डेटाबेस तैयार करना चाहिए, जिससे जानकारी मिले कि कौन-कौन से व्यक्ति उद्यानों को देखने आते हैं, क्योंकि इससे पता चलेगा कि ये लोग पेड़-पौधों और वन्य-जीवों में निरंतर रुचि रखते हैं। ऐसे लोगों को चिह्नित करके पार्क प्रबंधन से जोड़ना चाहिए और समय-समय पर होने वाली गोष्ठियों और वन सप्ताह आदि में बुलाकर उनके विचार सुनने चाहिए। ऐसा करके ही हम भविष्य के लिए उद्यानों के विकास एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए योजनाबद्ध रणनीति तैयार कर सकेंगे।

“ केंद्र और प्रदेश सरकारों को समझना चाहिए कि अभयारण्य सरकार की आय का स्रोत न बनकर रह जाए, बल्कि वन प्रेमियों की आस्था का तीर्थस्थल बन सके, जहां प्रवेश करना उनके लिए दुरूह न होकर प्रेरणादायक हो। आम लोगों में जब पेड़-पौधों व वन्य जीवों के प्रति सकारात्मकता व संवेदनशीलता की भावना पैदा होगी, तभी उनमें रहने वाले जीव हमारी पर्यावरणीय जैव विविधता को बढ़ाएंगे।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

क्या 'पेज थ्री सेलिब्रिटी' बनते जा रहे हैं रचनाकार?

अतुल सिन्हा

आज जो साहित्य लिखा-रचा जा रहा है, उनमें से ज्यादातर सोशल मीडिया के प्रचार, लाइक्स, कमेंट्स, भव्य विमोचन और तमाम पुस्तक मेलों से लेकर लिटरेचर फेस्टिवल को ध्यान में रखकर लिखा जा रहा है। इस सत्य को प्रकाशक भी स्वीकारते हैं और लेखक भी। दरअसल पिछले कुछ सालों में बाजार के दबाव में साहित्य का जो उत्सवी चेहरा, भव्यता और लेखकों के स्टारडम वाली ईमेज देखने को मिली है, पश्चिमी देशों के प्रकाशकों की तरह यहां भी कुछ पुस्तकों को 'बेस्ट सेलर' बनाने की जो होड़ दिखती है, उससे साफ है कि साहित्य में जबरदस्त ग्लैमर की घुसपैठ हो चुकी है। कुछ मायने में इसे अच्छा भी मान सकते हैं कि चलिए, इसी बहाने साहित्य, साहित्यकारों, लेखकों को जितना निरीह माना जाता था, बाजार ने उन्हें भी ब्रांड बनाना शुरू कर दिया है।

जो हमारे कालजयी लेखक हुआ करते थे, बेशक देश, काल, समाज को देखते हुए उनका लेखन आज की पीढ़ी को या कहें कि आज के दौर के रचनाकारों को भी उतना न भाए, लेकिन अब चूंकि बाजार ने उन्हें भी एक बड़ा ब्रांड बनाकर बेचना शुरू कर दिया है, तो इसे उनके लिए भी स्वर्णिम काल ही मान लिया जाए। बहरहाल इस चर्चा का मकसद नकारात्मक न माना जाए, बल्कि साहित्य के इस स्वर्णिम काल को सकारात्मक तौर पर देखा जाए। हमारे कवि मित्र और कुछ अन्य साथी पत्रकार, लेखक और मौजूदा साहित्यिक, सांस्कृतिक परिदृश्य पर चिंता जताने वाले रचनाकर्मी इस बाजारवाद और चमक दमक को लेकर सवाल उठाते हैं और कहते हैं कि आज जिस तरह देशभर में 300 से ज्यादा लिटरेचर फेस्टिवल या पुस्तक मेले हो रहे हैं, साहित्य उत्सव के मेले लग रहे हैं, वहां लेखक और साहित्यकार कहां खड़ा है? अपनी लिखी पुस्तकों को छपवाने से लेकर उसका भव्य विमोचन कराने, समीक्षाएं लिखवाने, तमाम वीडियो प्लेटफॉर्म पर चर्चा करवाने, साहित्य उत्सवों के मंच पर आने की इसी भूख को प्रकाशकों के बाजार भाव ने बखूबी समझा है। अब पूरे साल देश में कहीं न कहीं ऐसे आयोजन होते रहते हैं। कोरोना काल के बाद अचानक ऐसे साहित्यिक सांस्कृतिक आयोजनों की बाढ़ आ गई है, बड़ी संख्या में लोग उमड़ रहे हैं, हर आयोजन में कोई न कोई सेलिब्रिटी लाने की कोशिश होती है। आयोजकों के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रायोजक जुटाकर लाभ और शोहरत कमाना उनके व्यवसाय का एक हिस्सा भी है। इसे आप 'सोशल रेस्पॉन्सिबिलिटी' भी कह सकते हैं और बड़ी कंपनियों के 'सीएसआर फंड' को खर्च करने का एक माध्यम भी। इसका गणित बहुत बारीकी से काम करता है। साहित्य के इन 'मेगा

इवेंट्स' के लिए नामी गिरामी इवेंट मैनेजमेंट कंपनी आ चुकी हैं। आप अपना आइडिया दीजिए, मोटी धनराशि खर्च कीजिए और फिर देखिए इसकी भव्यता। साहित्यकार, लेखक भी खुश और नई पीढ़ी को मुफ्त में कुछ सेलिब्रिटी को देखने सुनने का सुनहरा मौका भी। छोटे बड़े प्रकाशकों के स्टॉल भी और इसी बहाने कुछ पुस्तकों की बिक्री भी।

मैं तो ये देखने आया हूं कि कैसे साहित्य का चेहरा आज बदला है। पहले लेखक एक 'बेचारा' था, अपनी रॉयल्टी के लिए परेशान रहता था, प्रकाशकों और लेखकों के बीच एक शीतयुद्ध छिड़ा रहता था, उसकी छवि दीन हीन होती थी, लेकिन तब वह जो लिखता था वह जीवन की सच्चाइयों को करीब से देखकर लिखता था, मानवीय संवेदना को महसूस करके लिखता था, सत्ता और बाजार के चक्रव्यूह में नहीं फंसा था। भाषा और शब्दों को लेकर उसकी अपनी चिंताएं थीं, बहस होती थीं, वैचारिक टकराव को संजीदा तरीके से सामने लाने का भी एक तरीका था। त्रिलोचन, नागार्जुन, शमशेर, मुक्तिबोध, निराला, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा से लेकर महाश्वेता देवी तक में एक आत्मसम्मान, अक्खड़पन और आम आदमी के बीच से साहित्य को रचने का जज्बा था और दृष्टि तो थी ही, लेकिन अब वो एक पूरी पीढ़ी चली गई। सोशल मीडिया ने घर-घर में लेखक और कवि पैदा कर दिए, आज की राजनीतिक व्यवस्था ने अपनी वंदना करने वाले रचनाकारों को गढ़ने की प्रक्रिया तेज कर दी। एक लेखक पेड़ के नीचे छांव में बैठे मिले। कहने लगे, देखिए क्या हालत हो गई है। आयोजन साहित्य का हो रहा है और बड़े-बड़े कटआउट्स आज के उन एंकर्स के लगे हैं जिनका साहित्य से कोई नाता नहीं है। यहां एक भी लेखक या साहित्यकार का कोई कटआउट दिखा दीजिए। लेखक महोदय अपनी इस ईमानदार टिप्पणी को लेकर नाम न छापने का आग्रह भी करते हैं और फिर अपनी बात विस्तार से कहते भी हैं कि पुरस्कारों के कई मंच आ गए और मीडिया से साहित्य गायब हो गया या कहीं हाशिए पर पड़ा रहा। बेशक लेखक महोदय का दर्द हवा में नहीं है, इसके ठोस कारण हैं। यह सच है कि टीवी चैनलों की भरमार और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव ने साहित्य संस्कृति के बारे में भी सोचने को मजबूर किया। जाहिर है जब आप बाजारवाद के प्रभाव में आते हैं, ग्लैमर के खेल में फंसते हैं और सत्ता के तामझाम को महसूस करते हैं तो आपके लेखन पर भी उसका असर पड़ता है। आप किताबें भी वैसी लिखना शुरू करते हैं जिसकी बाजार में मांग हो, जिसका शीर्षक बिके, चर्चा में रहे, यानी आपकी अपनी टीआरपी हो।

काशी तमिल संगमम तमिलनाडु की राजनीति में प्रवेश

आर राजगोपालन

प्रधानमंत्री मोदी का काशी तमिल संगमम तमिलनाडु की राजनीति में प्रवेश का साहसिक कदम है। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के बहुत आक्रामक भाषणों से तमिलनाडु में विवाद पैदा हो गया, जिसमें कहा गया कि भगवान शिव के मुख से जो दो भाषाएं निकलीं, वे संस्कृत और तमिल थीं। काशी की घटना ने द्रमुक को झकझोर कर रख दिया है। भाजपा बहुत आक्रामक तरीके से तमिल सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ा रही है, जिसने द्रमुक सहयोगियों को मुश्किल में डाल दिया है। बनारस में नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए काशी तमिल संगमम का हजारों किलोमीटर दूर तमिलनाडु की राजनीति पर खासा प्रभाव पड़ा है। उस समारोह में मोदी के भाषण ने हिंदुत्व की भावनाओं को जगाया, क्योंकि उन्होंने तमिल महाकाव्यों का उल्लेख किया। यह संगमम आजादी के अमृत महोत्सव के तहत हुआ। तमिलनाडु के विभिन्न पीठों के 15 महंत उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ बैठे थे। प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री योगी ने इन महंतों के आगे माथा टेका। ये वीडियो और तस्वीरें तमिलनाडु में वायरल हो गईं। इसके अलावा, तमिलनाडु के सभी जिलों से 2,500 स्कूल/कॉलेज के छात्र आईआईटी, मद्रास और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के सहयोग से तीन विशेष ट्रेनों में बनारस पहुंचे। बॉलीवुड संगीतकार इलैयाराजा ने रुद्रम से छंद लेकर आर्केस्ट्रा का प्रदर्शन किया। बनारस के इस समारोह और प्रधानमंत्री मोदी के भाषण को सभी तमिल न्यूज चैनलों ने लाइव प्रसारित किया। अलग-अलग राज्यों के लिए भाजपा अलग-अलग रणनीति अपनाती है।

उत्तर प्रदेश में राजनीतिक रूप से निपटने के लिए उसने बुलडोजर चलवा दिया, तो महाराष्ट्र, दिल्ली और पश्चिम बंगाल में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) का इस्तेमाल किया। झारखंड के लिए इसने अलग तरीका अपनाया। तेलंगाना में भाजपा तेलंगाना राष्ट्र समिति के प्रमुख के चंद्रशेखर राव पर हमलावर हो गई। लेकिन तमिलनाडु में पैठ बनाने के लिए भाजपा और उसके नेताओं ने तमिल भाषा और संस्कृति को अपनाया। और इसका लाभ भी भाजपा को मिल रहा है। भाजपा की दक्षिण की ओर देखो नीति आक्रामक होने वाली है, क्योंकि हैदराबाद राष्ट्रीय कार्यकारिणी में लिए गए फैसले भी लाभ दे रहे हैं। दूसरी ओर, भाजपा विरोधियों की स्थिति तमिलनाडु में बहुत ही निराशाजनक दिखाई देती है। जैसे कि द्रमुक आंतरिक कलह में फंसी है और उसके हर नेता अलग-अलग विचार प्रकट कर रहे हैं, जिनसे तमिल राजनीति भ्रमित हो रही है। छह महीनों में मोदी ने चार बार तमिलनाडु का दौरा किया है। अमित शाह दक्षिणी राज्यों के किसी भी दौरे में तमिलनाडु के किसी एक जिले में जरूर जाते हैं। 45 केंद्रीय मंत्री तमिलनाडु के एक से दूसरे जिले का दौरा कर रहे हैं। वर्ष 2019 में भाजपा ने पूर्वी राज्यों की तरफ ध्यान केंद्रित किया, तो वहां से उसे 25 सांसद मिले। वर्ष 2024 के लिए भाजपा दक्षिणी राज्यों को लेकर उत्सुक है। इसी वजह से भाजपा के केंद्रीय मंत्री तमिलनाडु में घूम रहे हैं। तमिलनाडु की राजनीति अब एक दिलचस्प मोड़ ले रही है और एक दूसरे के खिलाफ तीखी आलोचनाएं की जा रही हैं। कभी मोदी को काले झंडे दिखाए गए थे, लेकिन अब वह स्थिति नहीं है।

अन्नाद्रमुक गुटबाजी और कानूनी मुद्दों को लेकर गहरे संकट में फंसी है। जयललिता के बाद उनकी पार्टी तीन या चार खेमों में बंट भी गई है। अन्नाद्रमुक की तुलना शिवसेना से की जा सकती है, जिसके दोनों गुट चुनाव चिह्न के लिए लड़ रहे हैं। एमजीआर और जयललिता का प्रिय चुनाव चिह्न दो पत्तियां था। पार्टी के विभिन्न गुट इस चुनाव चिह्न पर दावा कर रहे हैं, जिससे इस चुनाव चिह्न का अस्तित्व संकट में पड़ गया है। शिवसेना और अन्नाद्रमुक, दोनों चुनाव आयोग से राहत चाहती हैं। कहने की जरूरत नहीं कि भाजपा द्वारा इन दोनों दलों की कलाई मरोड़ने की अनदेखी नहीं की जा सकती। यदि विपक्षी दलों की राजनीति निराशाजनक है, तो तमिलनाडु में सत्ताधारी दल द्रमुक की राजनीति भी बेकार है। एमके स्टालिन और दुरई मुरगन के बयान चौंकाने वाले हैं। द्रमुक महासचिव दुरई मुरुगन ने एक सार्वजनिक बैठक में स्वीकार किया कि तमिलनाडु में भाजपा की बढ़ती पैठ द्रविड़ संस्कृति के लिए अच्छी बात नहीं है। द्रमुक वंशवाद के मुद्दों से जूझ रही है। इसके नेता स्टालिन का कहना है कि उन्हें नींद नहीं आती, क्योंकि पार्टी के नेता अलग-अलग विचार व्यक्त करते हैं और द्रमुक दिग्गजों के बीच व्यक्तित्व संघर्ष जारी है। स्टालिन ने द्रमुक कैडरों को अपने नाजुक स्वास्थ्य के बारे में भी बताया। उनके इस बयान से द्रमुक सहयोगियों में कोई अच्छा संदेश नहीं गया। द्रमुक के वरिष्ठ मंत्री उपेक्षित महसूस करते हैं। स्टालिन के बेटे का प्रभाव युवा मंत्रियों पर ज्यादा है। धीरे-धीरे स्टालिन अपने पुत्र उदयनिधि को पार्टी के साथ सरकार में भी शामिल कर रहे हैं, जिससे पुराने नेताओं में बहुत ज्यादा असंतोष है। 2024 का लोकसभा चुनाव और 2026 का विधानसभा चुनाव द्रमुक के लिए परीक्षा की घड़ी होंगे। भाजपा ने तमिल संस्कृति, तमिल भाषा और तमिल पहुंच को प्रेरित करने के लिए द्रमुक शैली की रणनीति तैयार कर तीन कोणों से द्रमुक को घेर लिया है। भाजपा ने द्रमुक से तमिल छीनकर तमिल भाषा को अपने पाले में कर लिया है। इसने स्टालिन के तीन प्रमुख सहयोगी दलों-वीसीके, सीपीएम और कांग्रेस को झकझोर दिया है। द्रमुक सहयोगी चाहते हैं कि तमिलनाडु में भाजपा की पैठ पर अंकुश लगाया जाए। तमिलनाडु के मतदाता मुफ्त उपहार, ईंधन की कीमतों में कमी, हर महिला के लिए 1,000 रुपये और द्रमुक के कई अन्य चुनावी वादों को पूरा न करने के चलते ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। स्टालिन ने खुले तौर पर स्वीकार किया कि केंद्र द्वारा जीएसटी फंड जारी न करने के कारण वह ऐसे वादों को पूरा करने में असमर्थ हैं। जयललिता और करुणानिधि जैसे दिग्गज अब तमिल राजनीति में नहीं हैं।

बच्चों की इम्यूनिटी को मजबूत करती हैं रोजमर्रा की ये

हेल्दी आदतें

क्या आपने कभी इस बात पर गौर किया है कि आपके बच्चे को इतनी जल्दी-जल्दी बुखार, सर्दी या खांसी क्यों हो जाती है जबकि पड़ोस में रहने वाला बच्चा आपके बच्चे के दोस्त कभी इतनी जल्दी बीमार नहीं पड़ते हैं। अब, यदि आप इसकी तह तक जाने की कोशिश करते हैं और वैज्ञानिक रूप से इस तक पहुंचते हैं, तो यह थोड़ा मुश्किल और जटिल हो सकता है। लेकिन सच कहा जाए, तो यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपका बच्चा दिन के अंत में कितना सुरक्षित है। यहां हम आपको कुछ रोजमर्रा की ऐसी हेल्दी आदतों के बारे में बता रहे हैं जो बच्चे की इम्यूनिटी को मजबूत करने का काम करेंगी और बीमारी से भी बचा जा सकेगा। अगर आपका बच्चा बार-बार बीमार पड़ता है या उसे सर्दी-खांसी जैसी आम बीमारियां जल्दी घेर लेती हैं या उसकी इम्यूनिटी कमजोर है, तो आपको यहां बताई गई आदतों पर गौर करना चाहिए।

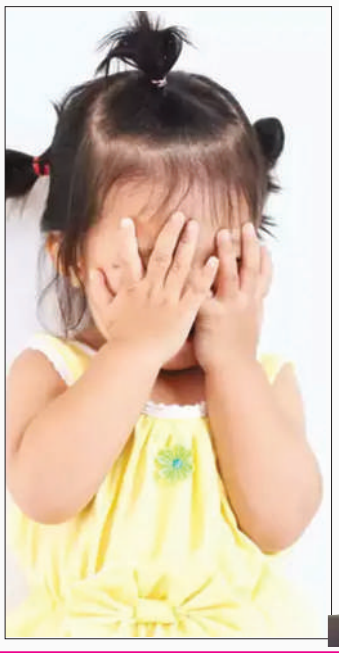

हाथों की सफाई है जरूरी

यह सुनने में जितना मामूली लगता है, संक्रमण के प्रसार को रोकने के लिए हाथ धोना उतना ही ज्यादा प्रभावी है। हाथ धोना उन कीटाणुओं और विषाणुओं को खत्म करने का एक शानदार तरीका है जो बच्चे खेलते समय, खिलौनों को शेयर करने, वस्तुओं को छूने आदि के दौरान ले सकते हैं। खासकर यदि आपके पड़ोस, स्कूलों या यहां तक कि आपके घर में कोई वायरस फैल रहा है, तो सुनिश्चित करें कि आपका बच्चा नियमित रूप से अपने हाथ अच्छी तरह धोए।

चेहरे को छूना

कई वायरस हवा के माध्यम से फैलते हैं, जो बीमार व्यक्ति द्वारा खांसने या छींकने पर आते हैं। यह नाक, आंख और मुंह के जरिए दूसरे व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करता है। यह महत्वपूर्ण है कि आप अपने बच्चे को बताएं कि चेहरे को छूने से बचना क्यों आवश्यक है। यहां तक कि वयस्कों के लिए भी, चेहरे को छूने की आदत नहीं रखनी चाहिए।

फिजिकली एक्टिव रहना

किसी के समग्र स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए नियमित व्यायाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। व्यायाम सेलुलर प्रतिरक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए जाना जाता है, जिसका अर्थ है कि यह शरीर में प्रतिरक्षा कोशिकाओं के संचलन को बढ़ाने में मदद करता है। जबकि बच्चों को वयस्कों की तरह तेज कसरत करने की जरूरत नहीं होती है, उन्हें कम से कम उन गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जो उन्हें पूरे दिन सक्रिय रखते हैं।

पर्याप्त नींद है जरूरीना

पर्याप्त नींद लेना जरूरी होता है, खासकर बच्चों के लिए। नींद की कमी अक्सर कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली से जुड़ी होती है। अध्ययनों से पता चला है कि जिन लोगों को अच्छी नींद नहीं आती है, उनके बीमार होने की संभावना अधिक होती है और यह बच्चों में भी होता है। माता-पिता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके बच्चे पर्याप्त नींद ले रहे हैं या नहीं।

वैक्सीनेशन लगवाना

सीडीसी की सलाह के अनुसार फ्लू जैसी कई बीमारियों से बचाने के लिए अपने बच्चे को टीका लगवाना ना भूलें। यह बच्चों को बीमारियों और इंफेक्शन से बचाने का बेस्ट तरीका है। इससे इम्यून सिस्टम को एक्स्ट्रा प्रोटेक्शन मिलती है।

हेल्दी खाएं

हर माता-पिता जानते हैं कि बच्चे की प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए पोषण कितना महत्वपूर्ण है। अपने बच्चे की खाने की थाली में ढेर सारे रंग-बिरंगे फल और सब्जियां डालें। विटामिन सी, डी और फाइबर से भरपूर खाद्य पदार्थों को शामिल करने का प्रयास करें, जो न केवल उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली और हड्डियों के स्वास्थ्य को बढ़ाएं, बल्कि पाचन को भी बढ़ावा दें।

हंसना मना है

पप्पू: पापा एक बात बोलूं... पापा: हां बोल। पप्पू: फेसबुक पर मेरी 10 फेक आईडी हैं। पापा: मुझे क्यों बता रहा है? पप्पू: आप जिस पूजा शर्मा को 10 दिन से चाय पे बुला रहे हो, वो मैं ही हूं। फिर क्या था, दे थप्पड़... दे थप्पड़..

संता: लड़कियां कभी खुद प्यार का इजहार नहीं करती हैं? बंता: क्यों? संता : ताकि ब्रेकअप करते समय वो ये कह सकें, कि तुम ही मेरे पीछे पड़े थे।

पत्नी: ये बंदूक लेकर दरवाजे पर क्यों खड़े हो? पति: शेर का शिकार करने जा रहा हूं। पत्नी: तो फिर जाते क्यों नहीं? पति बाहर कुत्ता खड़ा है।

दरोगा: घर में मालकिन के रहते हुए तुमने चोरी कैसे की? चोर: दरोगा साहब आपकी अच्छी नौकरी है, अच्छी तनख्वाह है, आप ये सब सीख कर क्या करेंगे?

महिला: मुझे मेरे पूर्व पति से फिर से शादी करनी है। वकील: अभी आठ दिन पहले ही तो आपका तलाक करवाया है। फिर क्यों शादी करना चाहती हो। महिला: वो तलाक के बाद बहुत खुश दिख रहे हैं और मैं ये बर्दाश्त नहीं कर सकती।

कहानी | दूसरों को छोटा न समझें

एक बार की बात है एक संत थे, वे अक्सर यात्रा पर रहते थे और उनका नियम था कि वे ऐसे ही लोगों के घर आश्रय लेते थे, जिनका आचार-विचार अच्छा हो और घर पवित्र हो। इस बार उन्होंने वृन्दावन जाने का सोची लेकिन पहुंचते-पहुंचते रास्ते में रात हो चुकी थी। तो उन्होंने सोचा कि इसी गांव में रात बिता लेता हूं और सवेरे जल्दी उठकर फिर से अपनी यात्रा को शुरू कर दूंगा। अब अपने नियम अनुसार उनको ऐसा घर खोजना था जो उनके रहने लायक हो। उन्होंने पता चला कि ब्रज के पास वाले गांव के सभी लोग धार्मिक है व कृष्ण के परम भक्त है। संत उस गांव गये और एक व्यक्ति के घर का द्वार खटखटाया और कहा, भाई मैं थोड़ा विश्राम करना चाहता हूं तो क्या मैं आपके घर रात बिता सकता हूं, लेकिन मेरा एक नियम हैं कि मैं केवल उसी के घर का भोजन और पानी ग्रहण करता हूं जिसके घर का आचार विचार शुद्ध हो। इस पर उस व्यक्ति ने कहा, महाराज माफ कीजिये मैं तो इस गांव का तुच्छ सा इंसान हूं। लेकिन इस गांव के सभी लोग मुझसे कही ज्यादा पवित्र हैं। फिर भी यदि आप मेरे घर में रुकेंगे तो मैं खुद को भाग्यशाली मानूंगा। इस पर संत कुछ नहीं बोले और आगे बढ़ गये, आगे जाकर एक और व्यक्ति से उन्होंने रात बिताने के लिए विनती की। तो इस दूसरे व्यक्ति ने भी वहीं बात कही। संत फिर बिना कुछ बोले आगे बढ़ गए। अब आगे जिसके भी घर गये सभी ने लगभग यही बात बोली। अब संत को अपनी खुद ही सोच पर लज्जा महसूस होने लगी कि वो एक संत होकर दूसरों को छोटा समझने की इतनी छोटी सोच रखते हैं जबकि एक आम आदमी जो गृहस्थ है वो अपने परिवार के जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी कितना उत्तम आचरण लिए हुए है कि खुद को गांव का सबसे छोटा बता रहा है और दूसरे सभी को खुद से बेहतर! अब वे सबसे पहले वाले आदमी के पास गये और उससे कहा क्षमा कीजिये, मुझे लगता है इस गांव का हर एक आदमी पवित्र है लेकिन मैं आपके घर रुकना चाहूंगा। **सीख: दोस्तों ये कहानी हमें विनम्र रहने की सीख देती है। खुद को छोटा समझना और दूसरों से अपनी तुलना नहीं करना ही आपको असल जिन्दगी में महान आचरण वाला बनाता है।**

10 अंतर खोजें

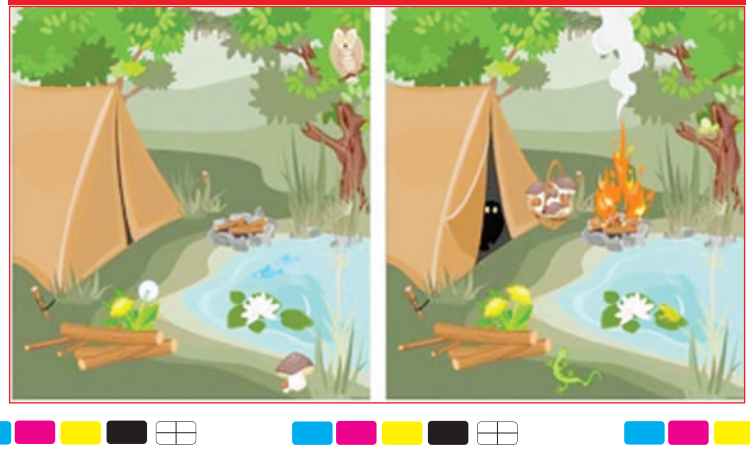

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

आपका आकर्षक बर्ताव दूसरों का ध्यान आपकी तरफ खींचेगा। आप घूमने-फिरने और पैसे खर्च करने के मूड में होंगे लेकिन अगर आपने ऐसा किया तो बाद में आपको पछताना पड़ सकता है।

वृषभ

आज आपका दिन शानदार रहेगा। नौकरी के क्षेत्र में आपको दूसरों से पूरा-पूरा सहयोग मिलेगा। आपसी समझ आपके दाम्पत्य संबंधों को बेहतर बनाएगी। पारिवारिक जीवन में खुशहाली आएगी।

मिथुन

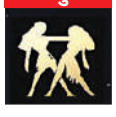

नौकरी के लिए किए गए प्रयास सार्थक सिद्ध होंगे, नौकरी मिल सकती है। क्रोध की अधिकता हो सकती है। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। वस्त्र उपहार में प्राप्त हो सकते हैं।

कर्क

अपने जीवन-साथी के साथ पारिवारिक समस्याओं को साझा करें। एक-दूसरे को फिर से भली-भांति जानने के लिए थोड़ा और वक्त एक-दूसरे के साथ बिताएँ और खुद की स्नेही जोड़े की छवि को मजबूत करें।

सिंह

आज आप परिवार वालों के साथ अधिक समय व्यतीत करेंगे। उन्नति के कई सुनहरे अवसर मिलेंगे। ऑफिस में आज सीनियर्स आपके काम से प्रभावित होकर आपको कोई गिफ्ट देंगे।

कन्या

आप अपने घर परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत बनाने में अहम भूमिका निभाएंगे। कार्य क्षेत्र में सभी योजनाएं आपके अनुसार होंगी। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। नौकरी मनोनुकूल रहेंगी।

तुला

काम का बोझ आज कुछ तनाव और खीज की वजह बन सकता है। जरूरत से ज्यादा खर्च करने और चालाकी-भरी आर्थिक योजनाओं से बचें। जिसके साथ आप रहते हैं, उससे वाद-विवाद करने से बचें।

वृश्चिक

आज आपका दिन पहले की अपेक्षा अच्छा रहेगा। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। फालतू विवादों से दूर रहने की कोशिश करें। किसी से बातचीत में थोड़ी कहा-सुनी हो सकती है।

धनु

आज परिवार के साथ संबंध अच्छे होंगे। एक्स्ट्रा इनकम के मौके मिल सकते हैं। पति-पत्नी के बीच मन-मुटाव हो सकता है। किसी को प्रपोज करने की सोच रहे हैं तो आपके लिए समय अच्छा है।

मकर

झगड़ालू स्वभाव को काबू में रखें, नहीं तो रिश्तों में कभी न मिटने वाली खटास पैदा हो सकती है। इससे बचने के लिए अपने नजरिए में खुलापन अपनाएँ और पूर्वाग्रहों को छोड़ें।

कुम्भ

आज अविवाहीत जातकोंन को रिश्ता आएगा। जीवनसाथी के साथ मन की बात साझा करेंगे। शादीशुदा लाइफ में साथी से तनाव हो सकता है। आप अपने साथी की यादों में खोए रहने वाले हैं।

मीन

आपका स्वास्थ्य पहले से अच्छा रहेगा। पारिवारिक वातावरण खुशनुमा बना रहेगा। धैर्यशीलता में कमी आएगी। पिता से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

दिल दहला दी संजय मिश्रा और नीना गुप्ता की वध

बॉलीवुड | गपशप

संजय मिश्रा और नीना गुप्ता के लीड रोल वाली फिल्म सस्पेंस से भरपूर फिल्म वध का जबरदस्त ट्रेलर रिलीज हो गया है। एक बार फिर से दोनों ही किरदारों का काफी दिलचस्प रोल देखने को मिल रहा है। वैसे, तो इन दोनों ही दिग्गज कलाकारों ने कई बेहतरीन कहानियां पर्दे पर पेश की हैं, इस बार दोनों के रोल्स ने ही होश उड़ा दिए हैं। 2 मिनट 41 सेकंड के वध के इस थ्रिलर ट्रेलर में कई ऐसे सीन्स देखने को मिल रहे हैं, जो झकझोर कर रख देंगे। बहुत कम ही फिल्मों के ट्रेलर ऐसे होते हैं, जिन्हें देखते हुए बार-बार और ज्यादा देखने की इच्छा होती है। वध का ट्रेलर कुछ ऐसा ही है। फिल्म का ट्रेलर हम सभी की उम्मीदों से कई गुना बेहतर साबित हुआ है, जो फिल्म के लिए भी उत्सुकता बढ़ा रहा है। ट्रेलर देखा जा सकता है कि पंडित जी एक पुलिस स्टेशन में कांस्टेबल के सामने बैठे हैं और उन्हें बता रहे हैं कि उन्होंने एक मर्डर किया है। संजय बताते दिख रहे हैं कि उन्होंने एक शख्स को मारा फिर उसके आटे की चक्की में डालकर पीस दिया, जबकि कांस्टेबल को लगता है कि वह उसके साथ कोई मजाक कर रहे हैं। कांस्टेबल के सामने कातिल खुद बैठकर अपना जुर्म कुबूल कर रहा है, लेकिन वह संजय मिश्रा को गिरफ्तार नहीं करता। वहीं, जब सच सामने आता है तो पुलिस और कातिल के बीच एक अजीब सा खेल शुरू हो जाता है। इसी दौरान ट्रेलर में देखा जा सकता है कि कैसे कुछ लोग संजय मिश्रा और उनके परिवार को बेहद परेशान कर रहे हैं। अब ट्रेलर में ही ये बात भी साफ होती दिखने लगती है कि इस हत्या के बीच एक गंभीर वजह है। फिल्म में नीना गुप्ता को संजय मिश्रा की पत्नी के रोल में देखा जा रहा है। ट्रेलर से ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि फिल्म अपने साथ बांधे रखने में सफल होगी। हर सीन को बहुत खूबसूरती के साथ बुना गया है। राजीव बर्नवाल और जसपाल सिंह संधू के सह-निर्देशन में बनी फिल्म वध को फिल्मकार लव रंजन ने प्रोड्यूस किया है, जो अपनी रोमांटिक कॉमेडी फिल्मों के लिए जाने जाते हैं। यह फिल्म इसी साल 9 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

फिल्मों के लिए तैयार हुई सलमान खान की भांजी अलीजेह

सलमान खान यानि बॉलीवुड के भाईजान का सिर्फ भारत ही नहीं दुनियाभर के कई देशों में दीवानापन कायम है। अपने जीजा आयुष शर्मा की नैया पार लगाने के बाद अब सलमान खान अपनी भानजी को भी फिल्मों लेकर आने वाले हैं। पहले अपडेट थी कि मलाइका अरोड़ा और अरबाज खान के बेटे अरहान जल्द ही होम प्रोडक्शन में एक्टिंग का जौहर दिखाएंगे। ताजा अपडेट ये है कि सलमान खान की भांजी अलीजेह जल्द पर्दे पर आने वाली हैं।

पिछले कुछ समय से अलीजेह अग्निहोत्री की डेब्यू की बातें चल रही थीं। अब इस बात को लेकर अधिकारिक घोषणा कर दी गई है। बता दें कि अलीजेह नेशनल अवॉर्ड विनिंग निर्देशक सौमेंद्र पाधी की फिल्म से करियर की शुरुआत करने जा रही हैं। फिल्म का काम तो शुरू हो गया है लेकिन नाम अभी तक फाइनल नहीं किया गया है। अलीजेह सलमान खान की बड़ी बहन अलवीरा और अतुल अग्निहोत्री की बेटी हैं। वैसे तो अलीजेह के पिता अतुल अग्निहोत्री भी सिनेमाई दुनिया के चर्चित एक्टर हैं। उन्हें नाना पाटेकर के साथ क्रांतिवीर फिल्म के लिए जाना जाता है। वहीं अलवीरा की बात करें तो वो पेशे से फिल्म प्रोड्यूसर और फैशन डिजाइनर हैं। अलीजेह की फिल्म 2023 में रिलीज होने वाली है। वहीं बात करें उनके डेब्यू की तो डायरेक्टर पाधी को कल्ट वेब सीरीज जामताड़ा के सीजन 1 और 2 के लिए जाना जाता है। सौमेंद्र को उनकी नेशनल अवॉर्ड विनिंग फिल्म बुधिया सिंह के लिए भी जाना जाता हैं।

बॉलीवुड | मन की बात

बिहारी बाबू बिजी हुए तो फिल्म 'एक नजर' में मिला ब्रेक : रजा मुराद

अभिनेता रजा मुराद का जब भी नाम याद आता है तो जेहन में एक बुलंद आवाज गूंजती है। रजा मुराद ने फिल्मों में जितने खतरनाक किरदार निभाए हैं, उससे कहीं ज्यादा वह नर्म दिल इंसान हैं और आज भी मिट्टी से जुड़े हुए हैं। जब भी मौका मिलता है, वह अपने पैतृक शहर उत्तर प्रदेश के रामपुर जरूर जाते हैं। रजा मुराद अपने जमाने के मशहूर अभिनेता मुराद के बेटे हैं। मुराद ने अपने करियर में करीब 500 फिल्मों में काम किया और अभिनेता रजा मुराद अपने 51 साल के करियर में अब तक 548 फिल्मों में काम कर चुके हैं। 23 नवंबर 1950 को जन्मे रजा मुराद से उनके जन्मदिन के मौके पर ये खास बातचीत की। उन्होंने बताया कि निर्माता निर्देशक बी आर इशारा की 1972 में रिलीज हुई अमिताभ बच्चन और जया भादुड़ी स्टारर फिल्म एक नजर से मैंने करियर की शुरुआत की। बी आर इशारा को पुणे फिल्म इंस्टीट्यूट के छात्रों से बहुत लगाव था। अपनी सुपरहिट फिल्म चेतना भी उन्होंने इंस्टीट्यूट के छात्रों को लेकर ही बनाई थी। एफटीआई से पास होने के बाद मैं जब बी आर इशारा से मिलने गया तो उन्होंने कहा कि जब भी आपके लायक कोई रोल होगा तो बुलाऊंगा। फिल्म 'एक नजर' में वकील का जो किरदार मैने निभाया उसे पहले शत्रुघ्न सिन्हा करने वाले थे। लेकिन, तब तक शत्रुघ्न सिन्हा इतने व्यस्त हो चुके थे कि उनकी डेट्स में दिक्कत हो रही थी तो उनकी जहब बी आर इशारा ने मुझे बुलाया। मुझे आज भी याद है, 28 जुलाई 1971 को मैंने पहला शॉट दिया था।

इस जगह पर अपने आप खिसकते हैं पत्थर, कहा जाता है मौत की घाटी

दुनिया में कई बेहद रहस्यमयी जगहे हैं। इनमें कई बेहद खूबसूरत हैं जो लोगों के मन को मोह लेती हैं। हालांकि कुछ जगहे खतरनाक भी हैं। इन जगहों पर जाने में लोग खौफ खाते हैं। अमेरिका के कैलिफोर्निया में एक ऐसी ही जगह जिसे दुनिया में सबसे गर्म माना जाता है। यहां का तापमान इतना अधिक है कि किसी की चमड़ी जल सकती है। आज हम आपको अमेरिकी के डेथ वैली के बारे में बताते हैं। इस रहस्यमयी जगह पर भारी भरकम पत्थर अपने आप सैकड़ों फीट तक खिसककर चल जाते हैं। आखिर यह पत्थर कैसे खिसकते हैं? इसके बारे में कई रिसर्च इस जगह पर की गई, लेकिन आज तक इसके रहस्य से पर्दा नहीं उठाया जा सका है। इसकी वजह से देश-विदेश से कई पर्यटक इस स्थान को देखने के लिए आते हैं। कैलिफोर्निया के दक्षिण पूर्व में स्थित नेवादा राज्य के पास यह स्थान स्थित है जो 225 किलोमीटर में फैला है। अभी तक इन पत्थरों को किसी ने भी चलते नहीं देखा है। यह पत्थर खिसकने के बाद एक लंबी रेखा अपने पीछे छोड़ देते हैं। रेखाओं के निशानों से इन पत्थरों के खिसकने के बारे में जानकारी मिलती है। इस डेथ वैली को मौत की घाटी के नाम से भी जाना जाता है। वैज्ञानिकों ने पत्थरों को खिसकने को लेकर अलग अलग थ्योरीज दी हैं। इस रहस्य को जानने के लिए वैज्ञानिकों का एक दल साल 1972 में इस जगह पर गया था। उन्होंने इन पत्थरों के ऊपर करीब 7 साल तक रिसर्च किया। वैज्ञानिकों ने इस दौरान 317 किलोग्राम के एक पत्थर पर खासतौर पर रिसर्च किया। हालांकि इस रिसर्च के दौरान वह पत्थर अपनी जगह से जरा भी नहीं हिला। कुछ सालों के बाद वैज्ञानिक एक बार फिर उस पत्थर के बारे में जानने के लिए वापस वहां पर पहुंचे, तो वह करीब 1 किलोमीटर की दूरी मिला। इसे देखने के बाद कई वैज्ञानिक हैरत में पड़ गए थे। दूसरे कई वैज्ञानिकों का कहना है कि यह पत्थर तेज हवाओं की वजह से खिसकते हैं। हालांकि शोधकर्ता इन पत्थरों के खिसकने की वजह को लेकर सहमत नहीं हैं। कुछ लोगों का मानना है कि पारलौकिक शक्तियां इन पत्थरों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर खिसकाती हैं। स्पेन की कम्प्लूटेंस यूनिवर्सिटी के रिसर्चर्स के मुताबिक, ऐसा यहां की मिट्टी में मौजूद माइक्रोब्स की वजह से होता है। माइक्रोब्स की वजह से मिट्टी चिकनी बन जाती है। इसकी वजह से पत्थर मिट्टी पर खिसकते हैं। हालांकि पत्थर के रहस्यमयी ढंग से खिसकने की वजह का कोई ठोस निष्कर्ष अभी तक नहीं निकल पाया है।

अजब-गजब | बिहार के सिवान के बंगरा नामक गांव में हुआ था इसका जन्म

भारत का सबसे बड़ा ठग, जिसने कई बार बेच दिया था ताजमहल और लालकिला

दुनिया में कई ऐसे बड़े ठग हुए हैं, जिनके कारनामें सुनकर लोग दांतो तले उंगलियां दबा लेते हैं। भारत में भी ऐसे कई ठग हुए हैं। भारत में एक ठग ऐसा भी था, जिसके चर्चे विदेशों ते में थे। इस ठग का नाम मिथिलेश कुमार श्रीवासतव था, जिसे नटवरलाल के नाम से जाना जाता है। इस ठग ने 3 बार ताजमहल, 2 बार लाल किला और 1 बार राष्ट्रपति भवन बेचा था। नटवरलाल एक ऐसा शातिर ठग था जिसने वकालत की पढ़ाई करने के बाद ठगी को अपना पेशा बनाया। आज हम आपको भारत के इस सबसे बड़े ठग की कहानी बताने जा रहे हैं।

मिथलेश का जन्म बिहार के सिवान के बंगरा नामक गांव में हुआ था। मिथलेश की पढ़ाई में ज्यादा रूचि तो नहीं थी लेकिन खेल में मिथलेश फुटबाल और शतरंज ज्यादा पसंद किया करता था। यही कारण था कि मिथलेश उर्फ नटवरलाल मैट्रिक की परीक्षा में फेल हो गया और उसके पिताजी ने जमकर धुनाई कर दी। एक दिन मिथलेश ने अपने पडोसी ही ठग लिया। पड़ोसी ने उसे बैंक में ड्राफ्ट जमा कराने भेजा था। मिथलेश ने पड़ोसी के फर्जी हस्ताक्षर कर बैंक अकाउंट से रुपए निकाल लिए। इस पर पिता ने उसको पीटा तो वह घर से भागकर कोलकाता चला आया।

कोलकाता जाकर उसने कॉमर्स से ग्रेजुएशन की। बाद में सेठ केशवराम नाम के एक व्यक्ति ने मिथिलेश को अपने बेटे को पढ़ाने के लिए रख लिया। इस दौरान जब मिथिलेश ने सेठ से अपनी स्नातक की पढ़ाई के लिए पैसे उधार मांगे तो सेठ ने मिथिलेश को पैसे देने से इनकार कर दिया। सेठ के इनकार करने से मिथिलेश इतना चिढ़ गया कि उसने रुई की गांठ खरीदने के नाम पर सेठ से 4.5 लाख रुपए ठग लिए। सत्तर से अस्सी के दशक में नटवरलाल ने कई लोगों को लूटा। उसने लूट की कई ऐसी घटनाओं को अंजाम दिया जिसने सबसे बड़ा ठग बना दिया। मिथलेश उर्फ नटवरलाल ने ताजमहल को तीन बार, लाल किला को दो बार और एक बार राष्ट्रपति भवन को बेच दिया था। हैरानी की बात तो यह है कि जब उसने संसद को बेचा था, तब सारे सांसद वहीं उपस्थित थे। इस शातिर ठग ने इमारतों को ही अपना निशाना नहीं बनाया देश के पहले राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद के हस्ताक्षर की नकल भी कर डाली दी थी। वह टाटा, बिड़ला समेत कई नामचीन उद्योगपतियों को भी अपने ठगी शिकार बना चूका था।

शातिर ठग नटवरलाल के खिलाफ 8 राज्यों में 100 से अधिक मामले दर्ज किए गए थे। ऐसा नहीं कि नटवरलाल कभी गिरफ्तार नहीं हुआ था। उसे 9 बार पक?ा गया और हर बार वो फरार हो जाता था। अदालत ने नटवरलाल को 113 साल का सजा दी थी। आखरी बार जब नटवरलाल पुलिस के गिरफ्त में आया तब उसकी उम्र 84 साल थी। लेकिन साल 1996 में 24 जून के दिन बीमार होने उसने बहाना बनाया और फिर उसे इलाज के लिए एम्स ले जाया जाने लगा। इसी दौरान वह पुलिस को चकमा देकर फरार हो गया। उसके बाद वो कहां गया आज तक किसी को नहीं पता चला।

मोदी-योगी के काम पर मिलेगा मैनपुरी में वोट : दयाशंकर सिंह

अखिलेश-शिवपाल के साथ आने को योगी के मंत्री ने बताया 'सुखद'

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी परिवार में दूरियां लगातार कम होती दिख रही हैं। मैनपुरी उपचुनाव ने पूरे कुनबे को एक बार फिर से साथ ला दिया है। पहले सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने चाचा शिवपाल यादव के पैर छूकर आशीर्वाद लिया तो अब शिवपाल यादव ने बड़े भाई प्रो. रामगोपाल के पैर छुए। सपा कुनबे के एक होने पर परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह का बयान आया है। उन्होंने कहा कि ये बहुत सुखद है कि परिवार में एकता आ रही है, लेकिन बीजेपी की चुनौती एक परिवार से नहीं हैं।

मंत्री दयाशंकर सिंह ने कहा कि ये सुखद है कि परिवार में एकता आ रही है। अच्छी बात है होना भी चाहिए। उन्होंने कहा कि शिवपाल यादव का सपा के विकास में बड़ा योगदान रहा है। नेताजी के साथ उन्होंने बहुत संघर्ष किया है। उन्होंने कहा कि परिवार में फिर से एकता आ रही है इस पर मैं बधाई देता हूं। हालांकि बीजेपी की चुनौती परिवार से नहीं है। ऐसा होता तो सपा और बसपा दो छोर है पूरब और पश्चिम है, दोनों मिलकर भी चुनाव लड़े तब भी मोदी जी की आंधी में टिक नहीं पाए। आने वाले दिनों में तो उनकी सुनामी आने वाली है। उसमें इनकी एक दो जो सीटें बची थी वो भी चली जाएंगी। खतौली के उपचुनाव में सपा की कम सक्रियता पर दयाशंकर सिंह ने कहा कि आजमगढ़, रामपुर सबने देखा. जो माना जाता था कि ये सपा का किला कभी ध्वस्त नहीं हो सकता। इस बार भी मोदीजी और योगीजी के काम के बल पर बीजेपी मैनपुरी में लाखों वोट से जीतेगी। एक-एक करके उनके सभी गढ़ ध्वस्त हो चुके हैं।

गुजरात में आपस में लड़ रही कांग्रेस और आप

लखनऊ। केंद्रीय मंत्री और बीजेपी के वरिष्ठ नेता महेंद्र नाथ पांडेय ने यूपी में मैनपुरी लोकसभा और रामपुर व खतौली विधानसभाओं के उपचुनाव में बीजेपी की बड़ी जीत का दावा किया है। उन्होंने कहा कि जो क्षेत्र किसी राजनीतिक दल के कभी गढ़ माने जाते थे अब वहां की जनता भी देश के प्रधानमंत्री मोदी और यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ के विकास से जुड़ना चाहती है। जनता विकास के साथ जुड़ना चाहती है और भारतीय जनता पार्टी को ही उप चुनाव में वोट करेगी। महेंद्र नाथ पांडेय ने मैनपुरी उपचुनाव में सपा मुखिया अखिलेश यादव के मैनपुरी में डेरा डालने और चाचा शिवपाल यादव समेत पूरे परिवार के लोगों को चुनाव प्रचार में लगाए जाने पर भी तंज कसा। उन्होंने कहा कि जनता ये सब देख रही है। अखिलेश यादव उपचुनाव में चुनाव प्रचार करने नहीं जाते थे, लेकिन पत्नी डिंपल यादव को चुनाव जिताने के लिए वो मैनपुरी में डटे हुए हैं। दूसरी तरफ बीजेपी नेता से जब गुजरात विधानसभा चुनाव को लेकर उनसे सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि कहीं गुजरात में कोई लड़ाई नहीं है। भारतीय जनता पार्टी एक बार फिर से गुजरात में सरकार बनाने जा रही है। इस बार पार्टी को पिछले चुनावों से भी ज्यादा सीटें मिलेंगी। गुजरात में कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के त्रिकोणीय संघर्ष को लेकर उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी और कांग्रेस आपस में लड़ रही हैं और बीजेपी इन दोनों से बहुत आगे हैं। वहीं दिल्ली के एमसीडी चुनाव पर पर भी उन्होंने कहा कि दिल्ली की जनता आम आदमी पार्टी की तिकड़म को समझ चुकी है। यहां भी बीजेपी बड़ी जीत दर्ज करेगी।

24 में नहीं खुलेगा जेडीयू का खाता : आरसीपी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। पूर्व केंद्रीय मंत्री आरसीपी सिंह ने नीतीश कुमार पर हमला करते हुए कहा कि उनका प्रधानमंत्री बनने का सपना बैलून की तरह पहले ही फूट गया है। अब नीतीश कुमार के पास अपनी कोई प्रतिष्ठा नहीं, जो उसे बचा सकें। आरसीपी ने दरभंगा में कहा कि अब उनके पास कुछ नहीं, अब उनका अंत हो गया है।

जेडीयू और आरजेडी के विलय के पीछे कारण बताते हुए कहा कि बिहार में नीतीश कुमार को कोई जेडीयू में नेता नहीं मिल रहा है। यही वजह है कि जेडीयू और आरजेडी का विलय हो रहा है। तेजस्वी यादव को खुद नीतीश कुमार आगे बढ़ा रहे हैं। नीतीश की पार्टी पर करारा प्रहार करते हुए आरसीपी ने कहा कि आने 2024 के चुनाव में जेडीयू अकेले मैदान में आया तो खाता भी नहीं खुलेगा। महागठबंधन के साथ आने पर दो-चार में सिमट कर रह जाएंगे नीतीश कुमार। उन्होंने वर्तमान बिहार सरकार के मंत्रिमंडल पर तंज कसते हुए कहा कि यह पहला ऐसा मंत्रिमंडल है, जिसमें तीन-तीन मुख्यमंत्री और उसके दावेदार एक साथ हैं।

सांप्रदायिकता का आरोप लगने से नाराज हुए शशि थरूर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केरल में सांसद एमपी राघवन समेत कई प्रमुख नेताओं के साथ कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने मुलाकात की। इसे लेकर उन्होंने कहा कि उनकी इस मुलाकात को सांप्रदायिकता का रंग दिया जा रहा है। उन्होंने इसे लेकर मीडिया में हो रही बातों पर भी ऐतराज जताया। केरल विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष वीडी सतीशन ने कहा कि किसी तरह कि सांप्रदायिक गतिविधियों को पार्टी में इजाजत नहीं दी जाएगी। साथ ही चेताया कि इस तरह के मामलों के साथ गंभीर कार्रवाई की जाएगी। थरूर ने इस पर सवाल दागा कि कैसे दो कांग्रेस सांसदों की गतिविधियां सांप्रदायिक करार दी जा रहीं हैं।

शशि थरूर के मालाबार दौरे को लेकर मचे हंगामे के बीच सतीशन ने कहा कि पार्टी में किसी प्रकार की गुटबाजी या समानांतर गतिविधि की अनुमति नहीं दी जा सकती। ऐसी किसी भी गतिविधि से गंभीरता से निपटा जाएगा। उन्होंने कहा कि दो विधानसभा चुनावों में धक्का लगने के बाद प्रदेश में कांग्रेस पटरी पर लौटी है। ऐसे में किसी की समानांतर गतिविधि को सहन कर लेना अच्छा नहीं रहेगा। थरूर ने मीडिया से पूछा आप यहां गुब्बारों में हवा भरने नहीं आए हैं। आप लोगों से मेरे और राघवन के बारे में जो पूछ रहे हैं उसे सुन दुख होता है। कायक्रम के दौरान जिन लोगों से हम मिले उसमें सांप्रदायिकता कहां है? मैं जानना चाहूंगा। बता दें कि कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने मालाबार दौरे में मलप्पुरम के पनक्कड में संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) के सहयोगी आइयूएमएल के वरिष्ठ नेताओं के साथ मुलाकात की। उनके इसे दौरे से कांग्रेस के और नेताओं में बेचैनी बढ़ गई है। पार्टी के लोग थरूर की गतिविधियों पर पैनी नजर रख रहे हैं।

एफएसएल लखनऊ में होगी आजम की आवाज के नमूने की जांच

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा नेता आजम खां की आवाज के नमूने की जांच विधि विज्ञान प्रयोगशाला (एफएसएल) लखनऊ में होगी। कोर्ट ने रामपुर के एसपी और विधि विज्ञान प्रयोगशाला, लखनऊ के निदेशक को आदेश दिया है कि सात दिन के अंदर आजम खां के आवाज के नमूने लेकर पेश करें। इस मामले की अगली सुनवाई तीन दिसंबर को होगी।

मामला साल 2007 का है। विधानसभा चुनाव के प्रचार के दौरान आजम खां ने एक जनसभा को संबोधित किया था। जनसभा के बाद बसपा नेता धीर कुमार शील ने थाने में तहरीर देकर मुकदमा दर्ज कराया था कि आजम खां ने अपने भाषण में जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल किया है। तहरीर के बाद पुलिस ने इस मामले में रिपोर्ट दर्ज कर ली थी। पुलिस ने विवेचना के बाद कोर्ट में चार्जशीट दाखिल कर दी थी। जिसके बाद कोर्ट ने 30 अक्तूबर 2021 को आजम खां पर आरोप तय कर दिए थे। इस मामले में आजम खां की जमानत पहले ही मंजूर हो चुकी है।

आर्य समाज का विवाह प्रमाणपत्र वैधता का सबूत नहीं : हाईकोर्ट

» शादी के वैध सबूत के बगैर धारा 9 की अर्जी मंजूर नहीं की जा सकती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने हिंदू शादी को लेकर बड़ा फैसला दिया है। कोर्ट ने कहा है कि विवाह पंजीकरण वैध? विवाह का सबूत नहीं है। केवल इसे साक्ष्य के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। कोर्ट ने यह भी कहा कि आर्य समाज द्वारा जारी विवाह प्रमाणपत्र शादी की वैधानिकता का सुबूत नहीं है। हिंदू धर्म की शादी परंपरागत दोनों पक्षों की सहमति समारोह में होनी चाहिए, जिसमें सप्तपदी की रस्म पूरी हुई हो।

यह आदेश जस्टिस एसपी केसरवानी तथा जस्टिस राजेंद्र कुमार की खंडपीठ ने आशीष मौर्य की अपील पर दिया है। कोर्ट ने कहा कि जब शादी ही वैध नहीं तो हिन्दू विवाह अधिनियम की धारा 9 के तहत विवाह पुर्नस्थापन की अर्जी परिवार अदालत द्वारा स्वीकार न करना कानूनन सही है। शादी के वैध सबूत के बगैर धारा 9 की अर्जी मंजूर नहीं की जा सकती। कोर्ट ने परिवार अदालत सहारनपुर के धारा 9 की अर्जी खारिज करने के फैसले के खिलाफ प्रथम अपील खारिज कर दी है। याची का कहना था कि अनामिका धीमान उसकी पत्नी है। विवाह पुर्नस्थापित करने की परिवार अदालत में अर्जी दी। बार में समझौते के आधार पर वापस ले ली। किंतु कुछ दिन बाद दुबारा अर्जी दाखिल की। कथित पत्नी ने शादी होने से इन्कार कर दिया। कहा झूठी शादी की गई है। उसे ब्लैक मेल करने के लिए आर्य समाज से विवाह प्रमाणपत्र लिया गया है। इसी मामले में थाना सदर बाजार, सहारनपुर में एफआईआर दर्ज कराई गई है। पुलिस ने चार्जशीट भी दाखिल कर दी है। कोर्ट ने कहा सिविल प्रक्रिया संहिता के आदेश 11 नियम 2 के तहत अर्जी दाखिल की जा सकती है।

गुजरात में ओबीसी मतदाताओं को साध रहे शिवराज

ओबीसी और छोटी जाति के मतदाताओं को कर रहे प्रभावित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। दिसंबर माह में होने जा रहे विधानसभा चुनाव में जातिगत समीकरणों में फंसी गुजरात की राजनीति में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भाजपा के महत्वपूर्ण नेता बन गए हैं। शिवराज सिंह ओबीसी चेहरा हैं, जो गुजरात में लगातार बदल रहे जातिगत समीकरणों के बीच भाजपा को बड़ी राहत दे रहे हैं।

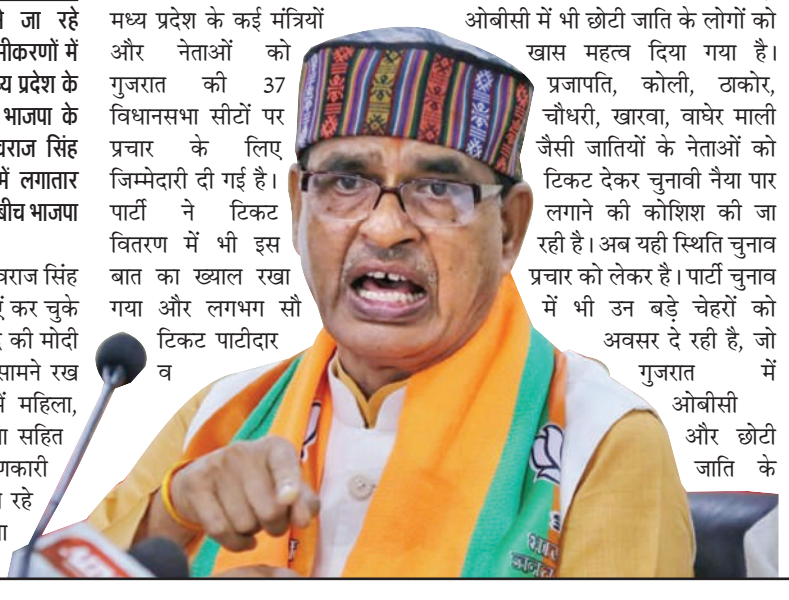

चार बार के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चुनावी अभियान में कई सभाएं कर चुके हैं। इस दौरान वह न सिर्फ केंद्र की मोदी सरकार की उपलब्धियों को सामने रख रहे हैं, बल्कि मध्य प्रदेश में महिला, बालिका, किसान, गरीब, युवा सहित विभिन्न वर्गों की कल्याणकारी योजनाओं को विस्तार से बता रहे हैं। साथ ही वह कानून-व्यवस्था के लिए सख्त फैसलों का उल्लेख भी करते हैं। शिवराज सहित मध्य प्रदेश के कई मंत्रियों और नेताओं को गुजरात की 37 विधानसभा सीटों पर प्रचार के लिए जिम्मेदारी दी गई है। पार्टी ने टिकट वितरण में भी इस बात का ख्याल रखा गया और लगभग सौ टिकट पाटीदार व ओबीसी वर्ग के नेताओं को बांटे गए। ओबीसी में भी छोटी जाति के लोगों को खास महत्व दिया गया है। प्रजापति, कोली, ठाकोर, चौधरी, खारवा, वाघेर माली जैसी जातियों के नेताओं को टिकट देकर चुनावी नैया पार लगाने की कोशिश की जा रही है। अब यही स्थिति चुनाव प्रचार को लेकर है। पार्टी चुनाव में भी उन बड़े चेहरों को अवसर दे रही है, जो गुजरात में ओबीसी और छोटी जाति के मतदाताओं को प्रभावित कर सकें। इसमें शिवराज सिंह चौहान का नाम सबसे ऊपर है। वह गुजरात चुनाव में भाजपा के स्टार प्रचारक बनाए गए हैं। वह देश में ओबीसी वर्ग के बड़े नेता माने जाते हैं। पहले चरण में उनकी कई सभाएं हो चुकी हैं।

हालांकि, गुजरात में ओबीसी वर्ग के बड़े नेताओं की कमी नहीं है, लेकिन पार्टी की सोच यह है कि शिवराज सिंह मध्य प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र में ओबीसी और आदिवासी मतदाताओं को लुभाने में सफल रहेंगे। मध्य प्रदेश भाजपा के उपाध्यक्ष जीतू जिराती ने कहा कि भाजपा के पास प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के रूप में करिश्माई चेहरा है। यह भाजपा की लोकप्रियता का ही कमाल है। देश में मोदीजी के बाद शिवराज सिंह चौहान का चेहरा सर्वाधिक लोकप्रिय है।

क्या लक्ष्मी मार्केट न तोड़ने के मामले में चल रही करोड़ों की डील!

» भूमाफिया दिलीप सिंह बाफिला पर एलडीए के अफसरों की मेहरबानी के चलते नहीं हो रही कार्रवाई

» भूमाफिया पैसों के दम पर कई मामलों को करा चुका है रफा-दफा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। भूमाफिया दिलीप सिंह बाफिला और तारा सिंह बिष्ट पर एलडीए मेहरबान है। आरोप है कि बाफिला ने कई आईएएस और आईपीएस अफसरों को जमीनें गिफ्ट की हैं। इसी के चलते कोई अफसर व अधिकारी उनसे लड़ाई मोल नहीं लेना चाहता। मंडलायुक्त रोशन जैकब के आदेश तक दरकिनार कर दिए गए। हकीकत यह है कि गोमतीनगर विस्तार स्थित लक्ष्मी मार्केट गिराए जाने की कार्रवाई करने की हिम्मत कोई नहीं दिखा रहा है। बल्कि अधिकारी व अफसर मौके पर जाकर खानापूर्ति कर रहे हैं ताकि लगे कि प्रशासनिक कार्रवाई जारी है। जबकि अंदरखाने लक्ष्मी मार्केट न तोड़ने के लिए करोड़ों की डील चल रही है।

यही नहीं, एलडीए यजदान बिल्डर के मामले में भी हाईकोर्ट की अनदेखी की गई। इस अवैध बिल्डिंग को तोड़ने के मामले में किसान यूनियन से वार्ता तो की, पर उनकी बात सुनी नहीं गई। बताया जा रहा है कि गोमतीनगर विस्तार स्थित लक्ष्मी मार्केट नहीं तोड़ा जा रहा, बल्कि अधिकारी और अफसर इस कार्रवाई को मैनेज करने के साथ काम्प्लेक्स को बचाने में जुटे हैं। इसमें बड़ी डील चल रही है। दरअसल, कुछ दिन पहले मंडलायुक्त डॉ. रोशन जैकब ने गोमतीनगर विस्तार स्थित लक्ष्मी मार्केट और भूमाफिया दिलीप सिंह बाफिला के अवैध कॉम्प्लेक्स को ध्वस्त होने से रोकने की अपील खारिज कर दी है। उन्होंने एलडीए का ध्वस्तीकरण आदेश सही ठहराते हुए भवन गिराने का आदेश दिया।

भू माफिया

एलडीए में बाफिला का है रूतबा

पैसे के दम और एलडीए के अफसरों व कर्मियों की मिलीभगत से भूमाफिया दिलीप सिंह बाफिला ने राजधानी लखनऊ में अरबों रुपये की सरकारी जमीन पर कब्जा कर रखा है। एलडीए में उसका रूतबा यहां तक पहुंच गया था कि वह सीधे अर्जन विभाग में घुसकर गोपनीय फाइलों से छेड़छाड़ करता और कर्मचारी उसके सामने हाथ बांधे खड़े रहते। बाफिला पर दर्जन भर से अधिक मुकदमे दर्ज हैं लेकिन मजाल उसके खिलाफ किसी अधिकारी ने कोई कड़ी कार्रवाई की हो। वह पैसे के बल पर अब तक कई मामलों को रफा-दफा भी करा चुका है। दिलीप सिंह बाफिला हिमालयन सहकारी आवास समिति का चेयरमैन भी रह चुका है। उस पर सरकारी सहित किसानों की जमीन कब्जाने के दर्जन भर से अधिक मामले विभिन्न थानों में दर्ज हैं। हालांकि उसने पैसे के बल पर कई मामले खत्म करवा दिए हैं।

जब बाफिला के इशारे पर खोल दी थी मैरिज लॉन की सील

नवंबर 2019 में गोमती नगर विस्तार के सेक्टर एक में दि हिमालयन सुपर हॉस्पिटल के नाम से आरक्षित जमीन का इस्तेमाल दिलीप सिंह बाफिला मैरिज लॉन के तौर पर कर रहा था। अवैध तरीके से निर्माण व इस्तेमाल करने पर एलडीए ने इसे सील कर दिया था। बेटे की शादी के मौके पर बाफिला के कहने पर एलडीए ने मैरिज लॉन की सील खोल दी थी। हालांकि बाद विहित प्राधिकारी पीसी पांडेय के निर्देश पर इसे दोबारा से सील कर दिया गया था।

दिलीप सिंह बाफिला ने गोमतीनगर विस्तार में अवैध ढंग से दुकानें और कांप्लेक्स बनवा ली हैं। एलडीए ने इसका ध्वस्तीकरण का आदेश पारित किया था। विरोध में बाफिला ने कमिश्नर कोर्ट में अपील की थी।

कमिश्नर ने अपने आदेश में लिखा है कि बाफिला की बिल्डिंग भूउपयोग के विपरीत बनी है। भू उपयोग आवासीय है, लेकिन इसमें वर्तमान में भूतल, प्रथम तल, द्वितीय तल का काम्प्लेक्स बना है। मौके पर दुकानों के बड़े-बड़े बोर्ड भी लगे हैं। कमिश्नर ने उसकी अपील आधारहीन होने से निरस्त कर दी। आदेश की प्रति प्राधिकरण भेजने को कहा है, ताकि प्राधिकरण इसे ध्वस्त कराए। इसके अलावा तारा सिंह बिष्ट ने भी अवैध तरीके से गोमती नगर विस्तार में लक्ष्मी मार्केट बना रखा है। कमिश्नर ने तारा सिंह बिष्ट की भी अपील खारिज कर दी थी। बता दें कि दिलीप सिंह बाफिला अपनी हिमालयन सोसायटी के नाम पर सरकारी व किसानों की जमीनों पर कब्जा करके प्लॉटिंग करता है। 2015 में गोमतीनगर पुलिस ने उसे गिरफ्तार करके जेल भेजा था।

नेताजी ने कभी अपनी जमीन नहीं छोड़ी हमेशा सेवा की क्षेत्र की: अखिलेश

» इस उपचुनाव में हमारी सबसे बड़ी जीत होगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने मैनपुरी समाजवादी पार्टी कार्यालय में डिंपल यादव को विजयी बनाने के लिए व्यापक प्रचार एवं सघन जनसंपर्क अभियान के लिए कार्यकर्ताओं को प्रेरित किया। इस मौके पर अखिलेश यादव ने कहा कि संविधान की धज्जियां उड़ाई जा रही है।

अग्निवीर योजना की आलोचना करते हुए कहा कि जो देश की सेवा करना चाहता है वो कभी अग्निवीर नहीं बनना चाहेगा। फर्रुखाबाद में सेना भर्ती का आयोजन हुआ, लेकिन नौकरी किसी को नहीं मिली। सरकार कह रही है कि इन योजनाओं से बजट बच रहा है, लेकिन जब देश ही नहीं बचेगा तो बजट कैसे बचेगा। मैनपुरी की जनता ने नेताजी को बहुत सम्मान दिया है। यादव ने भूतपूर्व सैनिकों से कहा कि अगर आप लोग अपने बूथ को मजबूत कर देंगे, तो इस चुनाव में हमारी सबसे बड़ी जीत होगी। आपके लोग हर जगह हैं। भूतपूर्व सैनिकों की बात पर जनता भरोसा करती है। सबसे ज्यादा रिटायर्ड फौजी मैनपुरी, एटा, इटावा में है। उन्होंने कहा कि भाजपा साजिश कर सकती है। समाजवादी पार्टी पूरी मेहनत कर रही है। पूर्व सैनिक भी साथ दे देंगे तो हमें जीतने से कोई रोक नहीं सकता। अखिलेश यादव ने नेताजी को याद करते हुए कहा कि उन्होंने कभी किसी फैसले का मन बनाया तो उन्हें कोई रोक नहीं पाया। नेताजी जब रक्षा मंत्री थे तो सियाचिन में गए, बताया गया कि वहां बहुत ठंड होती है, आप धोती कुर्ते में नहीं जा सकते, लेकिन किसी की परवाह किए बिना वे धोती कुर्ते में ही गए। नेताजी रूस भी धोती कुर्ते में गए थे।

सपा का लक्ष्य विकास करना : डिपल

मैनपुरी लोकसभा उपचुनाव के व्यापक प्रचार अभियान में समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी पूर्व सांसद डिपल यादव ने आज कई स्थानों पर जनसंपर्क करते हुए मतदाताओं से भारी बहुमत से विजयी बनाने का अनुरोध किया। डिपल यादव ने मैनपुरी लोकसभा उपचुनाव में प्रचार अभियान के दौरान करहल में जगह-जगह नुक्कड़ सभाओं में जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम सबके साथ और हौंसले से मैनपुरी चुनाव भारी मतों से जीतेंगे। यह नेताजी को श्रद्धांजलि देने का चुनाव है। नेताजी इसी धरती से निकल कर आगे बढ़े और धरती पुत्र कहलाए। हमें पूरा भरोसा है कि यह धरती नेताजी का सम्मान बढ़ाने का काम करेगी। डिंपल ने कहा कि नेताजी ने यहां से संघर्ष किया था। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी जनता के लिए लड़ाई लड़ती है, संघर्ष करती है। समाजवादी पार्टी का लक्ष्य विकास करना है। हम माताओं, बहनों को न्याय दिलाएंगे। हमारा विश्वास है कि मैनपुरी की जनता इस लड़ाई में हमारा साथ देगी और नेताजी की समाजवादी पार्टी को आगे बढ़ाएगी।

चिन्हित किए 62 अपराधी, ढाई हजार करोड़ की संपत्ति जब्त

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। माफिया के आर्थिक साम्राज्य को ध्वस्त करने के लिए गठित की गई एंटी माफिया टास्क फोर्स ने अब तक 62 अपराधियों को चिह्नित कर उनसे ढाई हजार करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त की है। इनमें से 41 को अभियान चलाकर सजा भी दिलाई गई है। नौ की मुठभेड़ में मौत भी हुई है। अपर पुलिस महानिदेशक कानून व्यवस्था प्रशांत कुमार ने बताया कि एंटी माफिया टास्क फोर्स का गठन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर किया गया था। इसका परिणाम यह हुआ कि अब तक 21 मुकदमों में 12 माफिया व उनके 29 सहयोगियों को सजा दिलाई जा चुकी है। इनमें दो अपराधियों को मृत्युदंड की सजा भी शामिल है। अब तक चिह्नित अपराधियों की 2524 करोड़ की संपत्ति जब्त की गई है।

आवश्यकता है

लखनऊ के तेजी से बढ़ते हुए बहुचर्चित अखबार सांध्य दैनिक 4PM के लिये अनुभवी उपसंपादक और वीडियो एडिटर की जरूरत है।

खबरों पर तेज निगाह रखने वाले अपनी सीवी मेल करें।

daily4pm@gmail.com
sharmasanjaya.05@gmail.com

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।